प्रश्न 15. सही जोड़ियाँ मिलाओ–

क.	कृष्णराज सागर	–	खाद्य पदार्थ
ख.	गोमतेश्वर बाहुबली	–	टीपू सुल्तान
ग.	श्रीरंगपट्टनम	–	श्रवण बेलगोला
घ.	यक्षगान	–	कावेरी नदी
ङ.	महिषासुर	–	लोकनाट्य
च.	रसम	–	बैंगलोर
छ.	लालबाग	–	दैत्य

सोचकर लिखो–

प्रश्न 16. कर्नाटक के इन दर्शनीय स्थलों की तरह छत्तीसगढ़ में कौन–कौन–से दर्शनीय स्थल हैं?

क्र.	दर्शनीय स्थल	कर्नाटक	छत्तीसगढ़
1.	पहाड़ी पर स्थित देवी मंदिर	चामुंडेश्वरी देवी का मंदिर	————————
2.	एक बड़ा जलप्रपात	जोग प्रपात	————————
3.	एक राष्ट्रीय उद्यान	बाँदीपुर	————————
4.	प्राचीन विष्णु मंदिर	श्री रंगपट्टनम	————————
5.	बहुमूल्य वस्तु की खान	कोलार (सोने की खान)	————————

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 निम्नांकित शब्दों को शुद्ध कर लिखो।

उत्पत्ती, आर्कषण, अंतगर्त, भव्यभूमी, दशर्नीय, कनार्टक, आधारीत, नीराली, श्रद्धार्पूवक, उन्नती।

समझो

- निम्नलिखित एकवचन स्त्रीलिंग शब्दों को ध्यान से पढ़ो। इनके बहुवचन बनाते समय ई (दीर्घ) की मात्रा को इ (ह्रस्व) में बदल देते हैं और अंत में याँ लगाते हैं– जैसे –

मछली – मछलियाँ

तितली – तितलियाँ

प्रश्न 2. निम्नांकित एकवचन स्त्रीलिंग शब्दों को बहुवचन में बदलो।

लड़की, बेटी, रोटी, पोटली, तकली, बकरी, कटोरी, तरकारी, बीमारी, खिड़की।

रचना

- 'धान की बालियों से झालर बनाओ और अपनी कक्षा में लगाओ।

योग्यता–विस्तार

- छत्तीसगढ़ के पर्यटन केंद्रों की एक सूची बनाओ जिसमें यह बताया गया हो कि ये पर्यटन–केंद्र क्यों प्रसिद्ध हैं।
- कर्नाटक एवं छत्तीसगढ़ राज्यों की जानकारी निम्न बिन्दुओं के आधार पर लिखिए–

मुख्य बिंदु	कर्नाटक	छत्तीसगढ़
राजधानी		
पड़ोसी राज्य		
पर्यटन स्थल		
वृक्ष		
शहर		
कारखाना		
तीर्थस्थल		
लोकनॉट्य		

5KF957

पाठ–15

एक और गुरु–दक्षिणा

– राजे राघव

प्राचीन काल में विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर अध्ययन करते थे। गुरु समय–समय पर अपने शिष्यों की बुद्धि की परीक्षा लेते थे। इससे शिष्य के निपुण होने का ज्ञान होता था। शिक्षा पूरी होने पर विद्यार्थी अपने गुरु को स्वेच्छा से गुरु–दक्षिणा देते थे। कभी–कभी गुरु उनकी परीक्षा लेने के लिए भी गुरु दक्षिणा माँग लेते थे। इस कथा में एक अनोखी गुरु–दक्षिणा देने का विवरण हम पढ़ेंगे।

इस पाठ में हम सीखेंगे– विशेषण–विशेष्य, क्रिया, सामासिक शब्दों का सामान्य ज्ञान, सारांश लिखना।

एक थे ऋषि। गंगा तट पर उनका आश्रम था; मीलों लंबा–चौड़ा। बहुत–से शिष्य आश्रम में रहते थे। आश्रम में अनेक गाएँ थीं। हिरनों के झुंड आश्रम में चौकड़ी मारते, उछलते–कूदते फिरते थे।

ऋषि के शिष्यों में तीन प्रमुख शिष्य थे। तीनों ही अस्त्र–शस्त्र में निपुण, शास्त्र–ज्ञान में पारंगत, बोलचाल में मीठे, स्वभाव में विनम्र, धरती की तरह सहनशील, सागर की तरह गंभीर और सिंह के समान बलशाली थे।

वह पुराना जमाना था। उस समय आश्रम की गद्‌दी का अधिकारी होना ऐसा ही था, जैसे किसी राज–सिंहासन पर बैठ जाना। राजा स्वयं ऋषि–मुनियों के आगे सिर झुकाते थे।

ऋषि अपने तीनों शिष्यों से बहुत प्रसन्न थे। उन्हें वे प्राणों के समान प्रिय थे। मगर एक समस्या थी। ऋषि काफी बूढ़े हो गए थे। वे चाहते थे कि अपने सामने ही उन तीनों में से किसी एक को आश्रम का मुखिया बना दें। मगर बनाएँ किसे? यह समस्या भी छोटी नहीं थी। तीनों ही एक–से बढ़कर एक आज्ञाकारी थे, योग्य थे और सच्चे अर्थों में मुखिया बनने के अधिकारी थे।

ऋषि सोचते रहे, सोचते रहे। आखिर एक दिन उन्होंने तीनों को अपने पास बुलाया और कहा, "प्रियवर! तुम तीनों ही मुझे प्रिय हो। मैंने जी–जान से तुम्हें पढ़ाया–लिखाया और अस्त्र–शस्त्र चलाने की शिक्षा दी है। मुझे जो–जो विद्याएँ आती थीं, तुम्हें सब सिखा दीं। अब केवल गुरुमंत्र सिखाना बाकी है। गुरुमंत्र किसी एक को ही बताऊँगा। जिसे गुरुमंत्र बताऊँगा, वही मेरी गद्‌दी का अधिकारी होगा। मैं तुम तीनों की परीक्षा लेना चाहता हूँ।"

ऋषि की बात सुनकर तीनों ने सिर झुका लिया। वे बोले,"गुरुदेव, ऐसा कौन–सा काम

शिक्षण–संकेत– गुरुओं का शिष्यों के प्रति तथा शिष्यों का गुरुओं के प्रति व्यवहार पर चर्चा करें। उदाहरण स्वरूप आरुणि/एकलव्य की कथा संक्षेप में बताएँ। इस प्रसंग के साथ बच्चों को पाठ से जोड़ें। बच्चों को कहानी पढ़ने के लिए कहें, कहानी पर मौखिक प्रश्नोत्तर करें।

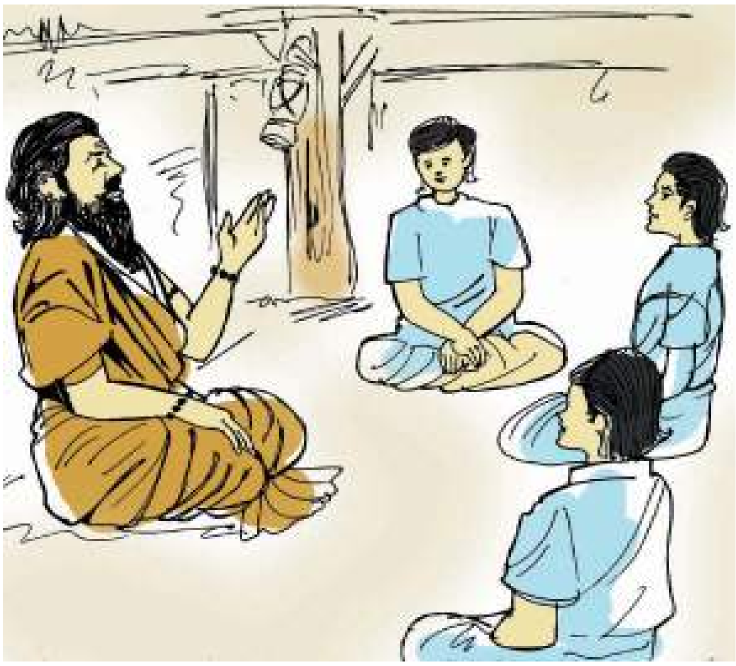

है, जो हम आपके लिए नहीं कर सकते?''

ऋषि मुस्कराकर बोले, ''यह मैं जानता हूँ। फिर भी परीक्षा, परीक्षा है। तुम तीनों अलग–अलग दिशाओं में जाओ और अपने श्रम से कमाकर मेरे लिए कोई अद्‍भुत भेंट लाओ। जिसकी भेंट सबसे अधिक सुन्दर और मूल्यवान होगी, वही गद्‍दी का अधिकारी होगा। ध्यान रहे, एक वर्ष में वापस आना भी जरूरी है।''

ऋषि की आज्ञा पाकर तीनों शिष्य चल पड़े। वे मन–ही–मन योजनाएँ बनाते चले जा रहे थे। उनमें से एक किसी राजा के पास जा पहुँचा। दरबार में जाकर उसने नौकरी करने की इच्छा प्रकट की। राजा तो ऋषि को जानते ही थे। उनका शिष्य कितना योग्य होगा, यह जानने में भी उन्हें देर न लगी। राजा ने उसे तुरंत अपने यहाँ रख लिया।

दूसरा शिष्य समुद्र पर पहुँचा। वह मछुआरों की बस्ती में गया और उनसे गोता लगाने की विद्या सीखने लगा। कुछ ही दिनों में वह भी कुशल गोताखोर बन गया।

तीसरा शिष्य चलते–चलते एक गाँव में पहुँचा। गाँव उजाड़ था। घर थे, जानवर थे, बच्चे थे, महिलाएँ थीं, मगर पुरुष एक भी नहीं था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। मालूम पड़ा कि यहाँ अकाल पड़ा है। कई वर्षों से पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है। सभी लोग सहायता के लिए राजा के पास गए हैं।

वह सोच में पड़ गया। फिर चल पड़ा अपने रास्ते पर। मगर उसे ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। सामने से गाँववालों की भीड़ आ रही थी। वे उदास थे और राजा को बुरा–भला कह रहे थे।

यह जानकर ऋषि के शिष्य को हँसी आ गई। एक राहगीर को हँसता देख गाँववालों को बुरा लगा। वे बोले– ''आप हँसे क्यों?''

''हँसी तो मुझे तुम्हारी मूर्खता पर आ रही है।''

''हमारी मूर्खता पर! अकाल ने हमें तबाह कर दिया है। भूखों मरने की नौबत आ गई है। हम सहायता के लिए राजा के पास गए थे। उसने भी हमारी सहायता नहीं की। आप हमें मूर्ख बता रहे हैं!''

''हाँ, मैं ठीक कह रहा हूँ। तुम सैकड़ों आदमी मिलकर कुछ नहीं कर सकते, तो राजा अकेला क्या कर लेगा? आदमी सहायता करने के लिए पैदा हुआ है।''

ऋषि के शिष्य की बात सुनकर सारे लोग सोच में पड़ गए। वे बोले, ''भैया, तुम तो चमत्कारी लगते हो। हम क्या जानें ? चलो, तुम ही हमारे दुखों को दूर कर दो।''

''मैं ही क्यों, तुम स्वयं हाथ उठाओ। कदम बढ़ाओ। हिम्मत से क्या नहीं हो सकता? उठाओ फाल–कुदाल। कुएँ खोदो। प्यासी धरती की प्यास बुझाओ।'' शिष्य बोला।

''कुएँ ! कुएँ तो गाँव में हैं, मगर सारे सूख रहे हैं। उनमें पानी नहीं, तो नए कुओं में कहाँ से आएगा?'' गाँववाले बोले।

''गाँववालों की बातें सुनकर ऋषि का शिष्य मुस्कराया। वह बोला, ''कुओं को सूखने की स्थिति में किसने पहुँचाया? क्या तुम लोगों ने कभी जल संरक्षण के कोई उपाय किए हैं? तुम सब लेने की धुन में लगे रहे, देने की बात किसी ने नहीं सोची। उसी का फल आज भुगत रहे हो। खैर, सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहा जाता। चलो, कुओं को और गहरा करो। पानी जरूर निकलेगा। जमीन पर हरियाली फैलेगी तो बादल भी आकर्षित होंगे। वर्षा होगी तो उसका पानी रोकेंगे।''

गाँववालों की समझ में बात आ गई। दूसरे दिन से गाँववाले कुएँ खोदने में जुट गए। श्रम के मोती पसीना बनकर गिरे, तो भगवान की आँखें भी भीग गईं। कुओं से शीतल जल–धारा फूट पड़ी। सूखी धरती हरियाली की चूनर ओढ़कर फिर से मुस्कराने लगी।

एक गाँव की हालत सुधरी। फिर दूसरे की सुधरी। श्रम और साहस का काफिला आगे बढ़ा। ऋषि का शिष्य गाँव–गाँव जाता। अकाल से लोगों को लड़ना सिखाता। दूर–दूर तक उसका नाम फैल गया। सभी उसे आदमी के रूप में 'देवता' समझने लगे। राजा के कानों तक भी यह बात पहुँची।

ऋषि अपने शिष्यों का इंतजार कर रहे थे। एक दिन पहला शिष्य पहुँचा। उसके साथ हाथी–घोड़े थे। उसने सिर झुकाकर कहा, ''गुरुदेव, देखिए राजा ने मेरी योग्यता से प्रसन्न होकर मुझे हाथी–घोड़े भेंट में दिए हैं।'' ऋषि मुस्कराए और चुप रहे। दूसरे दिन दूसरा शिष्य आया। उसने समुद्र से बहुत सारे बहुमूल्य मोती इकट्ठे किए थे। ऋषि ने मोतियों की पोटली ले ली और एक ओर रख दी। कहा कुछ नहीं।

पूरा वर्ष बीत गया। तीसरा शिष्य नहीं लौटा। दोनों शिष्यों को लेकर ऋषि उसकी खोज में चल पड़े। राजदरबारों में गए, मगर पता नहीं चला। नगरों में ढूँढ़ा, किसी ने कुछ नहीं बताया। रास्ते में शाही पालकी जा रही थी। ऋषि को देखकर पालकी रुक गई। राजा नीचे उतरे। ऋषि को प्रणाम किया। ऋषि ने राजा से कहा, ''राजन्! आपकी प्रजा बहुत सुखी है। चारों ओर लहलहाती फसल खड़ी है। आप भाग्यवान हैं।''

"नहीं ऋषिदेव!, यह प्रताप मेरा नहीं, देवता का है। मेरे राज्य में एक देवता ने जन्म लिया है। मैं देवता के दर्शन करने जा रहा हूँ।" देवता के पैदा होने की बात सुनकर ऋषि भी चकराए। वे भी राजा के साथ चल पड़े।

एक दिन ढूँढ़ते–ढूँढ़ते किसी गाँव में देवता मिल गए। धूल से सने, पसीने से लथपथ, गाँववालों के साथ काम में जुटे थे। राजा चकित रह गया। वह देवता कैसे हो सकता था? वह तो एक साधारण किसान जैसा था। सिर पर न मुकुट था, न गले में स्वर्ण के फूलों की माला। राजा आगे नहीं बढ़ा। चुपचाप खड़ा देखता रहा। मगर ऋषि चिल्लाए, "बेटा सुबंधु! तुम यहाँ? मैं तुम्हें ही ढूँढ़ता फिर रहा था।" कहते हुए ऋषि ने धूल–धूसरित सुबंधु को बाँहों में भर लिया। "क्या मुझे दक्षिणा देने की बात तुम भूल गए हो?" ऋषि ने कहा।

"नहीं गुरु जी! भूल कैसे जाता? मगर अभी काम अधूरा है। इन सारे लोगों के आँसुओं को पोंछना था। आप ही ने तो बताया था, "मनुष्य की सेवा से बढ़कर महान धर्म कोई नहीं है।"

राजा देखते रह गए। ऋषि की आँखें भी नम हो गईं। ऋषि ने भरे गले से कहा, "बेटा! तुमने ठीक ही कहा। तुम्हें सचमुच अब मेरे पास आने की जरूरत नहीं। तुमने इतने लोगों की भलाई करके मेरी दक्षिणा चुका दी है। जो दूसरों के आँसू लेकर उन्हें मुस्कराहट दे दे, वह सचमुच देवता है। तुम देवता से कम नहीं हो।" राजा का सिर सुबंधु के आगे झुक गया।

शब्दार्थ

निपुण	–	कुशल
तबाह	–	नष्ट
राहगीर	–	रास्ता चलनेवाला
धूलधूसरित	–	धूल में सने हुए
चौकड़ी भरना	–	उछलते हुए तेज दौड़ना
गोताखोर	–	पानी में डुबकी लगानेवाला
पालकी	–	मनुष्यों द्वारा उठाई जाने वाली सवारी

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. ऋषि का आश्रम कैसा था?

प्रश्न 2. गुरु ने शिष्यों की परीक्षा क्यों ली?

प्रश्न 3. ऋषि ने अपने शिष्यों की परीक्षा कैसे ली?

प्रश्न 4. पहला शिष्य कहाँ गया? उसने ऋषि को भेंट में क्या लाकर दिया?

प्रश्न 5. दूसरे शिष्य द्वारा दी गई मोतियों की पोटली का ऋषि ने क्या किया?

प्रश्न 6. ऋषि के तीनों शिष्यों की क्या विशेषताएँ थीं?

प्रश्न 7. सुबंधु ने गाँव में जाकर क्या देखा?

प्रश्न 8. सुबंधु ने गाँववासियों की दशा कैसे सुधारी?

प्रश्न 9. गाँव के लोग सुबंधु को देवता क्यों कहते थे?

प्रश्न 10. गुरु जी ने गुरु–मंत्र पाने का अधिकारी किसे माना? और क्यों?

प्रश्न 11. पहले विद्यार्थी आश्रम में रहकर ही पढ़ाई करते थे। सोंचकर बताओ कि आज भी तुम्हे स्कूल में रहकर ही पढ़ना होता तो क्या होता?

भाषातत्व और व्याकरण

गतिविधि

प्रश्न 1. पाठ को पढ़कर खाली स्थानों में, कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर भरो –

क. उन्हें वे प्राणों के समान .... थे। (प्रिय/प्रेम)

ख. राजन्! आप .... हैं। (भाग्यवान/भाग्यमान)

ग. आप हमें .... बता रहे हैं। (बुद्धिमान/बुद्धिवान)

घ. ऋषि की बात सुनकर तीनों ने सिर ....। (झुका लिया/पकड़ लिया)

ङ. वह तो एक .... किसान जैसा था। (असाधारण/साधारण)

प्रश्न 2. नीचे दिए गए खाली स्थानों में रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द भरो।

क. सुबंधु की भेंट मूल्यवान थी, पहले शिष्य की भेंट ....थी।

ख. दिनेश और विनय योग्य थे, सुरेश ....था।

ग. यह समस्या छोटी नहीं थी, बहुत ....थी।

घ. तीनों शिष्य परिश्रमी थे, वे .... नहीं थे।

ङ. वह पुराना जमाना था, अब ....जमाना है।

पढ़ो और समझो–

पाठ में आए निम्नांकित वाक्यों को पढ़ो–

क. बहुत–से शिष्य आश्रम में रहते थे।

ख. रास्ते में शाही पालकी जा रही थी।

ग. राजा नीचे उतरे।

घ. राजा ने उस व्यक्ति को ध्यान से देखा।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों से हमें किसी–न–किसी कार्य के होने का पता लगता है। **जिन शब्दों से हमें किसी कार्य के होने अथवा करने का पता लगता है, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।** ऊपर के पहले वाक्य में 'रहना', दूसरे वाक्य में 'जाना' तीसरे वाक्य में 'उतरना' और चौथे वाक्य में 'देखना' मूल क्रियाएँ हैं।

प्रश्न 3. पाठ में से कोई पाँच क्रिया शब्द छाँटकर लिखो।

प्रश्न 4. (क) नीचे लिखे वाक्यों में से विशेषण और विशेष्य छाँटो–

क. सैकड़ों आदमी मिलकर भी कोई काम न कर सके।

ख. ऋषि के शिष्य की बात सुनकर सारे लोग सोच में पड़ गए।

ग. सारे कुएँ सूखे पड़े हैं।

घ. प्यासी धरती की प्यास बुझाओ।

(ख) दोनों चौकोर में से विशेषण और विशेष्य लेकर सही जोड़े बनाओ।

लहलहाती, साधारण, अधूरा, महान, नम, धूल–धूसरित	आँखें, किसान, फसल, काम, सुबंधु, धर्म

समझो

गुरु–मंत्र	=	गुरु का मंत्र
ऋषि–मुनि	=	ऋषि और मुनि
धूल–धूसरित	=	धूल से धूसरित
जल–धारा	=	जल की धारा

प्रश्न 6. अब नीचे लिखे शब्दों को इसी प्रकार तोड़कर लिखो–

राज–सिंहासन, लंबा–चौड़ा, गुरु–दक्षिणा, जी–जान, बुरा–भला।

रचना

- 'एक और गुरु–दक्षिणा' कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखो।

योग्यता–विस्तार

- अर्जुन के गुरु का नाम द्रोणाचार्य था। इसी प्रकार निम्नलिखित महापुरुषों के गुरुओं के नाम तलाश करो।

  राम , चंद्रगुप्त, कृष्ण, शिवाजी, कर्ण, विवेकानंद, लवकुश।
- इस कहानी को संवाद का रूप देकर अभिनयपूर्वक कक्षा में प्रस्तुत करो।
- जल संरक्षण संबंधित पोस्टर बनाओ तथा स्लोगन भी लिखो।
- लोगों की भलाई के लिए किया गया कार्य जनहित कहलाता है। अतः दैनिक अखबार पढ़कर पता करो कि किन–किन जगहों पर जनहित के लिए क्या–क्या कार्य हो रहा है?

5KY18H

5L7HA5

पाठ–16

पत्र

– लेखकमंडल

पत्र द्वारा संदेश भेजने की प्रणाली काफी पुरानी है। यूँ आजकल दूरभाष की सुविधा हो जाने के कारण पारिवारिक पत्र–व्यवहारों में काफी कमी आ गई है, परन्तु दूरभाष पर हम उतनी जानकारी नहीं दे सकते, जितनी पत्र के द्वारा दी जा सकती है। बच्चे और युवा इसीलिए देश के कोने–कोने से तथा विदेशों से भी पत्र–मित्र के माध्यम से अपने मित्र बनाते हैं और अपने–अपने स्थान की जानकारी देते हैं। प्रस्तुत पत्र में एक बालिका ने अपनी सहेली को दिल्ली में मेट्रो रेल की वजह से आए बदलाव की जानकारी दी है।
इस पाठ में हम सीखेंगे– एकवचन से बहुवचन बनाना, क्रिया का काल, पत्र–लेखन।

132, सी–1 शाहदरा
दिल्ली
20 नवम्बर 2010

प्रिय मीना,

नमस्ते।

बड़े दिन की छुट्टियाँ होने वाली हैं। तुम कुछ दिनों के लिए दिल्ली अवश्य आना। तुम्हें याद होगा कि पिछले वर्ष हमने कितनी मौज–मस्ती से छुट्टियाँ बिताई थीं। अप्पूघर, चिड़ियाघर, गुड़ियाघर की सैर करने में कितना मजा आया था। हम लाल किला और कुतुबमीनार भी देखने गए थे। याद है, नंदा तो कुतुबमीनार की ऊँचाई देखते–देखते पीछे को ही लुढ़क गई थी। इस साल भी नंदा अपने भाई के साथ आ रही है।

इस बार एक नया आकर्षण तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। मेट्रो रेल के बारे में तुमने सुना या पढ़ा ही होगा। अभी तक मेट्रो रेल केवल कोलकाता में ही प्रचलित थी; पर दिल्ली में भी कई क्षेत्रों में चलाई जा रही है। सचमुच मेट्रो रेल में यात्रा करने का आनंद ही कुछ और है। अब मेट्रो रेल का जाल पूरी दिल्ली में बिछाया जा रहा है। इसकी पटरियाँ सड़क से ऊपर खंभों पर (ओवर ब्रिज) बिछाई गई हैं। कहीं–कहीं ये भूमि के नीचे भी हैं। कोलकाता की तरह दिल्ली की मेट्रो रेल पूर्णरूप से भूमिगत नहीं है। साफ–सुथरी दौड़ती तेज गाड़ी में शाहदरा से सफर करते हुए कब कश्मीरी गेट आ जाता है, पता ही नहीं चलता। बसों की धक्का–मुक्की और लंबी कतारों से राहत मिल गई है।

शिक्षण–संकेत– पत्र लिखने की आवश्यकता पर कक्षा में चर्चा करें। पत्र का महत्व बताएँ। पत्र के विविध रूप भी बताएँ। आवागमन के नए–नए साधनों की जानकारी देते हुए शहरों में उमड़ रही भीड़ के कारण होने वाली कठिनाइयों पर भी चर्चा करें। पाठ का वाचन करें। कक्षा को कई समूहों में बाँटकर पाठ के अंश पढ़ने को दें और उनका सार बताने को कहें। कुछ अन्य विषयों पर भी पत्र–लेखन कराएँ।

मेट्रो रेल के डिब्बे दक्षिण कोरिया से बनकर आए हैं। इसके दरवाजे स्वचालित हैं जो गाड़ी के रुकते ही या चलते ही अपने आप खुल या बंद हो जाते हैं। जगह–जगह मेट्रो रेलवे स्टेशन बनाए गए हैं जो बहुत सुंदर और सुविधापूर्ण हैं। काउंटर से टिकट या टोकन लेकर ही प्लेटफार्म पर प्रवेश किया जा सकता है और टोकन को एक मशीन में वापस डालकर ही बाहर आया जा सकता है। गाड़ी में प्रत्येक स्टेशन आने से पूर्व उसके नाम की घोषणा की जाती है जिससे यात्रियों को अपने निश्चित स्टेशन के आने का पता चल जाता है। गाड़ी के इलेक्ट्रानिक सूचना बोर्ड पर स्टेशन आने के पूर्व उसका नाम अंकित हो जाता है।

तुम तो जानती ही हो कि देश की राजधानी और महानगर होने के कारण दिल्ली की आबादी कितनी तेजी से बढ़ी है। यहाँ की अधिकांश जनता को कामकाज के लिए प्रतिदिन एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना–आना पड़ता है। इसी कारण दिल्ली की सड़कों पर बसों और वाहनों की संख्या भी बहुत अधिक हो गई है जिससे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इन समस्याओं को हल करने में मेट्रो रेल काफी मददगार होगी। मेट्रो रेल का कार्य बड़ी तेजी से प्रगति पर है और अगले कुछ वर्षों में इसके पूरे हो जाने की संभावना है। कल्पना करो तब दिल्ली कितनी आकर्षक और सुखद हो जाएगी।

अभी तुम दिल्ली आओगी तो यहाँ का बदला रूप देखकर आश्चर्य करोगी। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी। चाचा जी और चाची जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी सखी
कांता

शब्दार्थ

आकर्षण	–	खिंचाव	सैर	–	घूमना
अधिकांश	–	अधिकतर	स्वचालित	–	अपने आप चलनेवाली
प्रदूषण	–	....	मददगार	–	सहायता देनेवाला
संभावना	–	....	प्रतीक्षा	–	....

ऊपर कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे गए हैं। उन शब्दों के अर्थ नीचे कोष्ठक में लिखे गए हैं। उन्हें चुनकर शब्दों के सामने लिखो।

(दूषित होना, इंतजार, मुमकिन होना)

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. कांता ने किसे पत्र लिखा है?
2. पत्र में पत्र भेजनेवाला अपना पता कहाँ लिखता है?
3. मेट्रो रेलवे स्टेशन की क्या विशेषताएँ हैं?
4. मेट्रो रेल के डिब्बे किस देश से बनकर आए हैं?
5. मेट्रो रेल के चलने से किस समस्या से छुटकारा मिल गया है?
6. दिल्ली की आबादी क्यों बढ़ती जा रही है?
7. दिल्ली की सड़कों पर वाहनों की संख्या क्यों बढ़ती जा रही है?
8. मेट्रो रेल के यात्रियों को स्टेशन आने का पता कैसे चलता है?

प्रश्न 2. नीचे लिखी पंक्तियों के खाली स्थानों में पाठ के आधार पर उचित शब्द चुनकर भरो :–

1. तुम कुछ दिनों के लिए .... अवश्य आना। (दिल्ली/मुम्बई)
2. कुतुबमीनार की .... देखते हुए नंदा पीछे लुढ़क गई थी। (लम्बाई/ऊँचाई)
3. .... से टिकट या टोकन लेना चाहिए। (प्लेटफार्म/काउंटर)
4. मेट्रो रेल का कार्य .... गति से चल रहा है। (धीमी/तेज)
5. दिल्ली की आबादी तेजी से .... है। (घटी/बढ़ी)

प्रश्न 3. सोचो और लिखो–

1. हम किसी को पत्र क्यों लिखते हैं ?
2. बड़ों को पत्र लिखते समय संबोधन में क्या लिखा जाता है?
3. अपने से छोटों को पत्र लिखते समय संबोधन में क्या लिखते हैं?
4. पत्र में पता लिखते समय पिन कोड क्यों लिखना चाहिए?

प्रश्न 4. इस टिकट को देखो और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. इस टिकट पर कितने लोगों ने यात्रा की?
2. यह टिकट कहाँ–से–कहाँ तक की है?
3. इन दोनों स्थानों के बीच की दूरी कितनी है?
4. किराये के लिए कितने पैसे चुकाए गए?
5. टिकट धारकों की आयु क्या है?

गतिविधि

- कक्षा के दोनों समूह शब्दार्थ संबंधी गतिविधि करें। एक समूह शब्द बोले, दूसरा उसका अर्थ बताए, फिर यही गतिविधि उलटकर करें।

भाषातत्व और व्याकरण

पढ़ो और समझो–

	अ	ब	स	द
1.	छुट्टी	शाला	बगीचा	पुस्तक
2.	बकरी	बाला	शरीफा	नहर
3.	गठरी	माला	फीता	पेंसिल
4.	पटरी	घोषणा	बाजा	कमीज
5.	लकड़ी	योजना	ताला	चादर

ऊपर चार वर्गों में चार प्रकार के शब्द दिए गए हैं। अ वर्ग के नीचे 'ई' से अंत होने वाले पाँच स्त्रीलिंग शब्द हैं, ये सभी एकवचन में हैं। इनको बहुवचन बनाते समय 'ई' को 'इयाँ' और 'इयों' में बदल देते हैं, जैसे 'छुट्टियाँ', 'छुट्टियों'। ब के नीचे लिखे शब्द 'आ' से अंत होने वाले स्त्रीलिंग शब्द हैं। इनके बहुवचन 'एँ' और 'ओं' लगाकर बनाए जाते हैं, जैसे शालाएँ, शालाओं।

प्रश्न 1. ऊपर दी गई तालिका में 'स' और 'द' के नीचे लिखे शब्द किस लिंग के हैं? उन्हें बहुवचन में बदलो।

समझो

- 'मस्त' में 'ई' की मात्रा जोड़कर 'मस्ती' शब्द बना है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में 'ई' की मात्रा जोड़कर नए शब्द बनाओ और उनका वाक्यों में प्रयोग करो–

वापस, कम, तेज, देर, गलत।

इन वाक्यों को पढ़ो और समझो–

क. मीना दिल्ली गई थी।

ख. कांता दिल्ली में रहती है।

ग. दिल्ली में मेट्रो का विस्तार होगा।

पहले वाक्य से यह पता लगता है कि काम पूर्व में हो चुका है। दूसरे वाक्य से यह प्रकट होता है कि काम अभी हो रहा है। तीसरे वाक्य से यह प्रकट होता है कि कार्य आगे होगा। काम की दृष्टि से पहला वाक्य भूतकाल का है, दूसरा वाक्य वर्तमान काल का और तीसरा वाक्य भविष्यत् काल का है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों के काल लिखो और इन्हें निर्देशानुसार काल में बदलो–

क. हमने छुट्टियाँ बिताई थीं। (भविष्यत् काल)

ख. वह अपने भाई के साथ आएगी। (वर्तमान काल)

समझो

- हलंत वर्णों (क्, त्, स् आदि सभी) पर मात्रा नहीं लगाई जाती। 'बुद्धि' को अगर हम तोड़कर लिखें तो इस तरह लिखेंगे– ब + ु + द् + ि + ध। 'निश्चित' को इस तरह लिखेंगे– ि + न + श् + ि + च + त। 'निश्चित' लिखना गलत है।

प्रश्न 4. 'मुट्ठी', 'शुद्धि', 'क्रुद्ध', 'प्रसिद्धि', 'वृद्धि' शब्दों को तोड़कर लिखो।

- 'र' का प्रयोग चार रूपों में होता है। देखो और समझो–

  अ. र – राम, राजा, राज्य, राकेश।

  ब. र्‍ – धर्म, कर्म, शर्म, गर्त।

  स. ्र – ग्राम, ग्रह, चक्र, क्रम।

  द. ‸ – राष्ट्र, ड्रम, ट्रक, ड्रिल।

  'र' से बनने वाले शब्दों के उच्चारण में कोई कठिनाई नहीं होती। 'राम', 'राजा' आदि का उच्चारण सरल है। 'धर्म' का उच्चारण करो। 'ध' के बाद 'र' का उच्चारण होता है और 'म' का उच्चारण बाद में पूरा होता है। क्रम में 'क' का उच्चारण पहले होता है और 'र' का बाद में। इसमें 'क' आधा है और 'र्' पूरा। ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ) के साथ 'र' का प्रयोग ‸ रूप में होता है।

प्रश्न 5. ब, स और द वाले 'र' के प्रकारों के पाँच–पाँच शब्द लिखो।

रचना

- शाला–वार्षिकोत्सव की तैयारी के संबंध में अपने मित्र/सहेली को एक पत्र लिखो।
- आपके मोहल्ले में अत्यधिक गंदगी फैली है तो आप किसको पत्र लिखोगे? कैसे?

योग्यता–विस्तार

- महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस आदि महापुरुषों ने अपने पुत्र–पुत्रियों और मित्रों को कारागार से पत्र लिखे हैं। अपने शिक्षक की मदद से उन्हें खोजकर पढ़ो।
- अंतर्देशीय डाक टिकट, लिफाफा और पोस्टकार्ड संकलित करो और उनपर चर्चा करो। कक्षा में उनका प्रदर्शन करो और उन पर चर्चा करो।
- संदेश भेजने के और कौन–कौन से साधन है?

5LGSBS

पाठ–17

जीवन के दोहा

– ठाकुर जीवन सिंह

पाठ परिचय– मनखे के जिनगी म गीत–कविता के भारी महत्तम हे। कतको बिस्कुटक बात ल गीत–कवित्त के असलग ले बने समझे अउ समझाए जाथे। हमर पुरखा कवि कबीर, तुलसी, रहीम, वृन्द, रसखान मन अइसने जिनगी के गोठ अउ नीत के बात ल समाज ल बताय हे। ए गीत म घलो अइसने बात कहे गेहे। एकर से हमला सीख लेना चाही।

धुर्रा–माटी ल घलो, कभू न समझैं नीच।
पालन–पोसन इहि करय, कमल फुलय इहि कीच।।

टीका–बाना के धरे, होत न कोनो संत।
भीतर तो महुरा भरे, बाहिर बने महंत।।

चारी–चुगली ल समझ, खजरी, खसरा रोग।
खजुवावत सुख होत हे, पाछू दुख ला भोग।।

जउन गाँव जाना नहीं, पूछे के का काम।
पेड़ गिनाई बिरथ हे, फर खाये ले काम।।

मूँड़ सलामत हे अगर, पागा मिलय पचास।
हाथ–गोड़ के रहत ले, झन कर दूसर आस।।

बात निकलथे बात ले, सँवरय बिगड़य बात।
बात–बात दुध–भात हे, बात म जूता लात।।

छोटे–मोटे बात बर, बहस बहुत बेकार।
उलझव झन तकरार मा, चुप्पी एमा सार।।

शिक्षण संकेत– गुरुजी ह मगन हो के दोहा के चरचा करय अउ गा के सुनावँय। ओखर बाद लइका मन ले पढ़वाँय। दोहा के आखिर म "हो जीवन" कहिके मजा ले–ले के गावँय।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने

नीच	=	छोटा, महत्वहीन	टीका	=	तिलक
कीच	=	कीचड़	बाना	=	वेष
बिरथ	=	व्यर्थ	महन्त	=	साधु, धार्मिक मठ का प्रमुख
मूँड़	=	सिर	तुछ	=	तुच्छ, छोटा
वास	=	रहने का स्थान	बिस्कुटक	=	मुश्किल/कठिन पहेली
महुरा	=	जहर			

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि

कक्षा ल दू दल म बाँट के आपस म सवाल–जवाब के गतिविधि करवाए जाय। तेखर पाछू गुरुजी पाठ उपर मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। प्रश्न अइसन हो सकत हें–

(क) चारी–चुगली काबर नइ करना चाही ?

(ख) छोटे–मोटे तुछ बात बर बहस काबर नइ करना चाही ?

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

(क) छोटे अउ गरीब मनखे के काबर हिनमान नइ करना चाही ?

(ख) चारी–चुगरी ल खजरी रोग काबर केहे गे हे ?

(ग) टीका–बाना धर के मनखे ह का देखाना चाहथे ?

(घ) बहस करे ले बने चुप रहना हे, काबर ?

(ड.) मूड़ सलामत रेहे ले का मिलथे ?

प्रश्न 2. खाल्हे लिखाय दोहा के अर्थ लिखव–

(क) धुर्रा–माटी ल घलो, कभु समझें झन नीच ।
पालन–पोसन इहि करय, कमल फुलय इहि कीच ।।

(ख) चारी–चुगली ल समझ, खजरी–खसरा रोग।
खजुवावत सुख होत हे, पाछू दुख ल भोग ।।

(ग) मूँड़ सलामत हे अगर, पागा मिलय पचास ।
हाथ–गोड़ के रहत ले, कर दूसर नहिं आस ।।

प्रश्न 3. अधूरा दोहा ल पूरा करव–

(क) टीका–बाना के धरे, ... ।
...., बाहिर बने महंत।।

(ख) ...., पूछे के का काम ।
पेड़ गिनाई बिरथ हे, ...।।

प्रश्न 4. ओ दोहा ल छाँट के लिखव–

(क) जेन म ''फर खाय ले काम, पेड़ गिने के का काम'' हाना के प्रयोग होय हे।

(ख) जेन म मूँड़ अउ पागा के बात हे।

(ग) जेन म बात ले बात सँवरे–बिगड़े के बात केहे हे।

(घ) जेन म गरीब अउ अपन ले छोटे पद वाले मनखे के अपमान नइ करना चाही केहे गे हे।

(ङ.) जेन म बात म दूध–भात मिल सकथे अउ बात म जूता–लात घलो मिल सकथे, केहे गे हे।

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण

उलटा शब्द (विरोधी)

संत	=	असंत	बाहिर	=	भीतर
महुरा	=	अमरित	सुख	=	दुख

समान ध्वनि के शब्द लिखव

जइसे – नीच–कीच

(1) (2)

(3) (4)

5LZJF3

जोड़ा शब्द लिखव

जइसे – धुर्रा–माटी

(1) (2) (3)

पर्यायवाची शब्द लिखव

चिटकुन, पागा

प्रश्न 1. खाल्हे म लिखाय शब्द मन के हिन्दी मायने लिखव–

धुर्रा, कभू, कोनो, बाहिर, पाछू, बिरथा, जउन ।

प्रश्न 2. ये शब्द मन के वाक्य म प्रयोग करव–

हाँथ–गोड़, चारी–चुगली, टीका–बाना, पालन–पोसन ।

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखाय शब्द मन ल हिन्दी वर्णमाला के ओरी–पइत म लिखव–

आस, परम, जउन, खजरी, टीका, कीच, फर, पागा, चिटकुन ।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ी के कोनो कवि के कविता अउ गीत ल खोजव अउ लिखव ।
2. छत्तीसगढ़ी के एक लोकगीत याद करव अउ अपन कक्षा म गा के सुनावव ।

गतिविधि

गुरुजी ह कक्षा के लइका मन ल दू दल म बाँट के छत्तीसगढ़ी जनउला पूछे के खेल खेलावँय।

पाठ–18

हार नहीं होती

– हरिवंशराय 'बच्चन'

इस कविता में प्रयत्न एवं परिश्रम की महिमा गाई गई है। कवि कहता है कि निरंतर प्रयत्न करते रहने वालों की कभी पराजय नहीं होती। छोटी–सी चींटी जब दीवार पर चढ़ती है तो वह कई बार नीचे फिसल जाती है, किन्तु वह हार नहीं मानती। अंततः उसकी मेहनत बेकार नहीं जाती और वह ऊपर चढ़ने में सफल हो जाती है। गोताखोर उत्साह में भरकर गहरे पानी में उतरता है और मोती निकाल ही लाता है। असफलता को एक चुनौती की तरह स्वीकार करना चाहिए और संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

इस पाठ में हम सीखेंगे– शब्दों के शुद्ध रूप, तत्सम और तद्भव रूप, विलोम शब्द, मुहावरों के अर्थ।

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है,
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है,

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा–जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में,

शिक्षण–संकेत– बच्चों को बताइए कि जो निरंतर प्रयास करता रहता है, वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर ही लेता है। जिस काम को हम हाथ में लें उसे पूरा करके ही छोड़ें। कविता का सस्वर वाचन करें और अलग–अलग विद्यार्थियों से उसका अनुकरण वाचन कराएँ। कविता में जो उदाहरण दिए गए हैं, उनके अतिरिक्त कुछ अन्य उदाहरण देकर बताएँ कि जो लोग अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सतत् प्रयत्नशील रहते हैं, उन्हें सफलता अवश्य मिलती है। अँग्रेजी कविता की ये पंक्तियाँ भी कक्षा में सुनाएँ–

Try and try again boys,
You will succeed at last.

मुठ्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो, नींद चैन त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय–जयकार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।

शब्दार्थ

नौका	–	नाव	रगों में	–	नसों में
अखरना	–	खलना, बुरा लगना	सिंधु	–	समुद्र
चुनौती	–	ललकार	संघर्ष	–	टकराव, मुकाबला
हैरानी	–	आश्चर्य	मैदान छोड़ना	–	पीछे हटना
चैन	–	शान्ति	सहज	–	आसान

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. ''कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती'' इस पंक्ति का क्या आशय है?
2. चींटी किस प्रकार संघर्ष करती है?
3. सफलता पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
4. कविता की उन पंक्तियों को लिखो जो तुम्हे सबसे अच्छी लगी। क्यों अच्छी लगी?
5. यदि हम किसी काम को करने में किसी कारणवश असफल हो जाते है तो हमें निराश क्यों नहीं होना चाहिए।
6. परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए तुम क्या–क्या तैयारी करते हो?

प्रश्न 2. सही जोड़ी बनाओ–

नौका	–	एक चुनौती है।
चींटी	–	लहरों से डरती नहीं है।
गोताखोर	–	सौ बार फिसलती है।
असफलता	–	सिंधु में डुबकियाँ लगाता है।

प्रश्न 3 खंड 'अ' और खंड 'ब' से कविता के अंश लेकर पंक्तियाँ पूरी करो–

'अ'	'ब'
क्या कमी रह गई	हर बार नहीं होती
कोशिश करनेवालों की	जय–जयकार नहीं होती है।
मुट्ठी उसकी खाली	मोती गहरे पानी में
मिलते न सहज ही	हार नहीं होती।
कुछ किए बिना ही	देखो और सुधार करो।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियाँ किसके लिए प्रयुक्त हुई है–

1. मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती।
2. आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम और तद्भव शब्द चुनकर लिखो–

मोती, मन, लहर, सिंधु, नींद, हाथ, गाय, दर्शन, चरण, प्राण।

प्रश्न 2. नीचे लिखे शब्दों की जगह और कौन सा शब्द इस्तेमाल हो सकता है? खाली जगह में लिखो।

हार	....	सौ	....
नींद	....	सिंधु	....
कोशिश	....	डर	....
लहर	....	मेहनत	....

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों में से शुद्ध शब्द चुनकर लिखो–

चुनौती, मुठ्ठी, बड़ा, चढती, विस्वास, महनत, कोशिश, नन्नीं, नोका, साहस, संघर्ष।

प्रश्न 4 तुमने पढ़ा है कि कुछ शब्द सदा एकवचन में रहते हैं और कुछ शब्द बहुवचन में। दोनों प्रकार के दो–दो शब्द लिखो।

प्रश्न 5 'जय–जयकार करना', 'कोशिश करना' क्रियाओं का भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत् काल के एक–एक वाक्य में प्रयोग करो।

प्रश्न 6 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

हार, विश्वास, बढ़ना, सफलता, स्वीकार, उत्साह, चैन।

प्रश्न 7. मेहनत के मुहावरे–

कोल्हू का बैल ऐसे व्यक्ति को कहते है जो कड़ी मेहनत करता है या जिससे कड़ी मेहनत करवाई जाती है।

मेहनत और कोशिश से जुड़े कुछ और मुहावरे नीचे लिखे है। इनका वाक्यो में इस्तेमाल करो।

- दिन रात एक करना।
- पसीना बहाना।
- एड़ी–चोटी का जोर लगाना।

ऊपर में दिए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

योग्यता–विस्तार

- महाराणा प्रताप अकबर से पराजित होकर अरावली के जंगलों में चले गए। उन्होंने हार नहीं मानी थी। उनकी सफलता की कहानी खोजकर पढ़ो।
- अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन चुनाव में कई बार पराजित हुए किन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अंत में उनकी विजय हुई और वे राष्ट्रपति बने। इनका जीवन–चरित खोजकर पढ़ो।
- पांडवों ने बारह वर्ष का वनवास सहा, उन्होंने कौरवों के अत्याचार सहे लेकिन हार नहीं मानी। अंत में युद्ध में उनकी विजय हुई। महाभारत की कथा अपने शिक्षक से जानों।

इन कविताओं की पक्तियों को आगे बढ़ाओ।

घंटी बोली टन–टन–टन

....

कहां चले भाई कहां चले

....

रेल चली भई रेल चली

....

कल की छुट्टी परसों का इतवार

....

रोटी दाल पकाएंगें

....

5H9FGQ

पाठ–19

राष्ट्र–प्रहरी

5HBGFT

– संकलित

हर राष्ट्र अपनी सुरक्षा के इंतजाम करता है। उसकी बाह्य–सुरक्षा के लिए थलसेना, नौसेना और वायुसेना रहती है। इनके सैनिक हमारे राष्ट्र–प्रहरी हैं। ये राष्ट्र–प्रहरी आकाश में उड़ते हुए, सागर में घूमते हुए, बर्फ से ढँके पर्वतों पर भीषण ठंड सहन करते हुए निरंतर सजग रहते हैं। वीर सैनिक बनने का स्वप्न देखनेवाले ऐसे ही एक बालक की सोच हम इस पाठ में पढ़ेंगे।

इस पाठ में हम सीखेंगे– नए शब्दों के अर्थ एवं प्रयोग, विलोम शब्द, प्रत्यय एवं विराम–चिह्न।

अक्षय दूरदर्शन पर 26 जनवरी की परेड देख रहा था। जैसे ही थलसेना की टुकड़ी के सैनिक अपनी वर्दी में कदम–से–कदम मिलाते हुए आगे आए, अक्षय की आँखें चमक उठीं। कतारों में चलते घोड़ों और ऊँटों पर बैठे सैनिकों की शान ही निराली थी। अक्षय को एक के पीछे एक आती हुई सेना के सभी अंगों की टुकड़ियाँ आकर्षित कर रही थीं। वह सोचने लगा– "मैं बड़ा होकर क्या बनूँगा? क्या मैं भी ऐसी वर्दी पहनकर शान से परेड में भाग ले सकूँगा?" अक्षय मन–ही–मन एक संकल्प कर बैठा।

दूसरे दिन अक्षय ने पुस्तकालय से 'भारतीय सेना' पर एक पुस्तक पढ़ने के लिए ली। घर आते ही वह पुस्तक पढ़ने लगा।

''किसी भी देश की सीमाओं की सुरक्षा का दायित्व उसकी सेना पर होता है। भारतीय सेना के तीन अंग हैं– थलसेना, वायुसेना, नौसेना। नौसेना का अर्थ है– जलसेना। थलसेना के सैनिक भूमि अथवा थल पर युद्ध करते हैं। थलसेना में सैनिकों की संख्या सबसे अधिक होती है। एक तरफ हिमालय की ठिठुरानेवाली सर्दी और दूसरी तरफ शरीर को झुलसा देनेवाली रेगिस्तान की गर्मी। रेत के तूफानों की परवाह न करते हुए, सेना के वीर सिपाही हरदम चौकस रहकर अपने देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। थल सैनिकों की वर्दी का रंग मटमैला हरा होता है।

शिक्षण–संकेत– बच्चों से गाँवों, शहरों की रक्षा के संबंध में चर्चा करें। उनसे पूछें कि देश की सुरक्षा कैसे की जाती है? भारतीय सेना के संबंध में चर्चा करें। 15 अगस्त और 26 जनवरी को आयोजित होने वाली परेड पर प्रश्न पूछें। उन्हें बताएँ कि देश की रक्षा भूमि, आकाश और समुद्र तीनों ओर से करनी पड़ती है; इसलिए सेना के तीन अंग हैं– थलसेना, जलसेना और वायुसेना। प्रसंगवश एन.सी.सी पर भी चर्चा करें और इस संस्था की स्थापना के उद्देश्य भी बताएँ। कक्षा को कई समूहों में विभाजित कर दें और प्रत्येक को सेना के एक अंग पर पढ़ने, विचार करने को कहें। बाद में उन समूहों से चर्चा करें।

घायलों को अस्पताल ले जाने तथा संकट में घिरे नागरिकों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाने में भी वायुसेना महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नीली वर्दी में सजे वायुसेना के सैनिक हरदम सजग और सतर्क रहते हैं।

हमारे देश की नौसेना देश के समुद्री तटों और समुद्री सीमाओं की रक्षा करती है। नौसैनिक समुद्री लड़ाई में कुशल होते हैं और जल की सतह और गहराई दोनों में प्रहार करने में सक्षम होते हैं। नौसेना के सैनिकों की वर्दी का रंग सफेद होता है।

सेना के इन तीन प्रमुख अंगों की सहायता के लिए और भी महत्वपूर्ण इकाइयाँ होती हैं, जो युद्ध के हथियार, विभिन्न उपकरण, रसद, दवाइयाँ, कपड़े इत्यादि एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजती हैं। युद्ध के समय इनकी चुस्ती और फुर्ती देखते ही बनती है। सेना को ये किसी तरह की कोई कमी महसूस नहीं होने देती।

भारतीय सैनिक बहादुरी के लिए जितने विख्यात हैं, अपनी अनुशासनप्रियता के लिए भी उतने ही सराहनीय हैं। सैनिकों के इस अनुशासन से उनके हर काम में गति आ जाती है। जब वे समूह में चलते हैं तो उनका चलना भी देखने योग्य होता है। एक अच्छे सैनिक के गुण हैं– देशभक्ति, सजगता, साहस, धैर्य और अनुशासन। भारतीय सैनिकों में ये गुण कूट–कूटकर भरे हैं। यही नहीं बाढ़, तूफान, भूकंप, सूखा आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय वे जिस प्रकार जनता की सहायता करते हैं, इससे उनकी सेवाभावना का भी परिचय मिलता है।

थलसेना, वायुसेना और नौसेना इन तीनों अंगों के अपने–अपने प्रशिक्षण विद्यालय हैं, जहाँ देश के चुने हुए नवयुवकों तथा नवयुवतियों को प्रशिक्षित किया जाता है। इन विद्यालयों के कठोर अनुशासन के वातावरण में प्रशिक्षित होकर ये युवक और युवतियाँ हमारे देश की सेनाओं का गौरव बढ़ाते हैं।

भारतीय सेनाएँ सभी प्रकार के आधुनिकतम हथियारों से लैस हैं और सभी प्रकार की परिस्थितियों से निपटने में सक्षम हैं। हमारे देश के राष्ट्रपति सेना के तीनों अंगों के अध्यक्ष हैं।

प्रतिवर्ष भारत सरकार वीरतापूर्ण और साहसिक कार्यों के लिए सैनिकों को विशिष्ट पदकों से सम्मानित करती है। केवल पुरुष ही नहीं महिलाएँ भी सेना के विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है।''

अक्षय पुस्तक पर हाथ रखे हुए कुछ सोचने लगा। उसकी आँखों के सामने 26 जनवरी का वह दृश्य घूमने लगा जिसमें वह भी सैनिक वर्दी पहने राष्ट्रपति को सलामी दे रहा है।

शब्दार्थ

संकल्प	–	निश्चय, प्रतिज्ञा	परवाह	–	फिक्र
चौकस	–	होशियार, सजग	सीमा	–	सरहद
वर्दी	–	पोशाक, पहनावा	हमला	–	आक्रमण
प्रहार	–	चोट	सक्षम	–	क्षमतावान
उपकरण	–	सामग्री	रसद	–	भोजन–सामग्री
विख्यात	–	प्रसिद्ध	सजगता	–	जागरूकता
वीरतापूर्ण	–	बहादुरी से भरा	साहसिक	–	साहसपूर्ण
पदक	–	अलंकरण, तमगा	विशिष्ट	–	विशेष
सलामी	–	सलाम (नमस्कार) करना	लैस	–	सुसज्जित
दुर्गम	–	जहाँ जाना कठिन हो			
सुरक्षित	–	भली प्रकार से रक्षा किया हुआ			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. सही उत्तर पर गोला लगाओ –

1. इनमें से 'रसद' का अर्थ है–

   (अ) भोजन–सामग्री (ब) रसदार (स) रासता

2. नौ सेना रक्षा करती हैं–

   (अ) समुद्री सीमाओं की (ब) थल सीमा की (स) वायु मार्ग की

3. देश की सीमाओं की सुरक्षा का दायित्व होता है–

   (अ) शिक्षक पर (ब) सेना पर (स) डॉक्टर पर

4. सैनिक हरदम रहता है–

   (अ) सजग (ब) कमजोर (स) लापरवाह

5. शुद्ध शब्द है–

(अ) अनुसासन (ब) अनूशासन (स) अनुशासन

6. विरता शब्द का प्रत्यय है–

(अ) आ (ब) ता (स) अ

7. राष्ट्रीय पर्व है–

(अ) दीपावली (ब) दशहरा (स) 15 अगस्त

8. अच्छे विद्यार्थी का गुण है–

(अ) अनुशासन (ब) वीरता (स) कठोरता

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. भारतीय सेना के कितने अंग हैं?
2. किस सेना में सैनिकों की संख्या सबसे अधिक होती है?
3. नौसेना के सैनिकों की वर्दी का रंग कैसा होता है?
4. भारतीय सैनिक किसलिए विख्यात हैं?
5. देश की सीमाओं की सुरक्षा का दायित्व किस पर होता है?
6. वायुसेना क्या–क्या कार्य करती है?
7. नौसेना का प्रमुख कार्य क्या है?
8. एक अच्छे सैनिक में कौन–कौन–से गुण होते हैं?
9. भारतीय सेना के तीनों अंगों का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता है?

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

क. कुशल कलाकार सुंदर मूर्तियाँ बनाते हैं, ... कलाकारों की बनाई मूर्तियाँ उतनी सुंदर नहीं होतीं।

ख. जसपाल राणा एक विख्यात निशानेबाज हैं, रामबाबू गड़रिया .... डाकू था।

ग. मैं विशिष्ट हिन्दी पढ़ता हूँ, सलीम .... हिन्दी पढ़ता हैं।

प्रश्न 2. पाठ पढ़कर ऐसे शब्द ढूँढ़कर लिखो जिनमें 'ता' जोड़कर नए शब्द बनाए गए हों, जैसे– कठोर – कठोरता।

प्रश्न 3. नीचे लिखे अनुच्छेद में यथास्थान उचित विराम–चिह्नों का प्रयोग कर लिखो।

एक अच्छे सैनिक के गुण हैं देशभक्ति सजगता साहस धैर्य और अनुशासन भारतीय सैनिकों में ये गुण कूट कूटकर भरे हैं यही नहीं बाढ़ तूफान भूकंप सूखा आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय वे जिस प्रकार जनता की सहायता करते हैं इससे उनकी सेवा भावना का भी परिचय मिलता है

प्रश्न 4. नीचे लिखे वाक्यों में एक–एक शब्द अशुद्ध लिखा है। इन्हें खोजो और शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखो।

क. अक्षय दुरदर्शन पर 26 जनवरी की परेड देख रहा था।
ख. नौसैनिक समुद्री लड़ाइ में कुशल होते हैं।
ग. सेना के तीन प्रमूख अंग है।
घ. अक्षय मन–ही–मन एक संक्लप कर बैठा।
ङ. सैनिकों का अनुशासन सरहानीय है।

5HIBID

समझो

- "नौसैनिक समुद्री लड़ाई में कुशल होते हैं।" इस वाक्य में 'समुद्री' शब्द पर ध्यान दो। 'समुद्र' शब्द में 'ई' जोड़कर 'समुद्री' शब्द बना है। 'समुद्र' संज्ञा है और 'समुद्री' विशेषण। 'समुद्री' शब्द 'लड़ाई' की विशेषता बता रहा है।

प्रश्न 5. रिक्त स्थानों में दिए गए शब्दों का सही रूप बनाकर भरो–

क. नौसेना .... तटों की रक्षा करती है। (समुद्र)
ख. .... सेना के तीन प्रमुख अंग हैं। (भारत)
ग. हमारे देश के सैनिक अपनी .... के लिए प्रसिद्ध हैं। (बहादुर)
घ. वीर सैनिक बड़ी .... से देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। (सजग)
ङ. सैनिकों का अनुशासन .... है। (सराहना)

रचना

- जलसेना, थलसेना, वायुसेना के बारे में जानकारी एकत्रित कर लिखो।
- तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो? सोचकर लिखो।

योग्यता–विस्तार

- भारत सरकार द्वारा सैनिकों को दिए जाने वाले विशिष्ट पदकों के नाम ज्ञात करो और कक्षा में बताओ।
- गणतंत्र दिवस पर अपनी शाला में आयोजित कार्यक्रम पर दस वाक्य लिखो।

5HKCHG

पाठ–20

मस्जिद या पुल

– सुनीति

मुगल बादशाह अकबर भारत के लोकप्रिय शासक थे। प्रजा का सर्वाधिक हित उनके शासन का प्रथम उद्देश्य था। वे जनता के बीच वेश बदलकर उसकी कठिनाइयों का पता लगाते थे। वे धार्मिक प्रवृत्ति के थे किन्तु जनता की कठिनाइयों को दूर करने को अधिक महत्व की बात मानते थे। जब उनके सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि किसी स्थान पर 'मस्जिद और पुल' दोनों में से क्या बनवाया जाए तो उन्होंने जन–कल्याण को ध्यान में रखकर पुल बनवाया। लोकप्रिय शासकों को सदा जनता की सुख–सुविधाओं पर ध्यान पहले देना चाहिए। सम्राट अकबर ने वही किया।

इस पाठ में हम सीखेंगे– सर्वनाम शब्द और उनका प्रयोग, वाक्य परिवर्तन।

दीन–ए–इलाही, गरीब नवाज़, शहंशाह–ए–आलम, महान बादशाह अकबर की अगवानी में जौनपुर के सूबेदार मुबारक खान ने जमीन–आसमान एक कर दिया। यह उसकी बरसों पुरानी साध थी। बरसों से वह लगातार बादशाह को जौनपुर आने के लिए न्यौते–पर–न्यौता देता चला आ रहा था, मगर बादशाह की जान को बड़े झमेले थे। उस दिन भी बड़ी मुश्किल से उन्हें उधर जाने का मौका मिल पाया था।

बादशाह के पास समय बहुत कम था। हाथी की पीठ से उतरकर उन्होंने अभी दो घड़ी आराम भी न किया था कि सूबेदार मुबारक खान बादशाह को गोमती के किनारे दूर–दूर तक फैले उस लंबे–चौड़े मैदान में ले गया, जहाँ मस्जिद बनाने की योजना थी। वहाँ जाकर उसने बादशाह को मस्जिद का नक्शा दिखाया। इस नक्शे को दिखाने के लिए वह बरसों से बेकरार था।

बादशाह ने नक्शे को बड़े ध्यान से देखा। उसे देखकर बादशाह की बाँछें खिल गईं। उन्होंने कहा, ''बेशक, नक्शा बहुत खूबसूरत है मुबारक खान! आसमान को चूमने वाली इसकी ऊँची–ऊँची मीनारें, निराले गुंबद, खुला तालाब, सब–के–सब बेमिसाल हैं। हमारा खयाल है कि खुदा के लाखों बंदे इसमें बैठकर अल्लाहताला से दुआ करेंगे और सुकून पाएँगे।''

''जी आलमपनाह, यह खूबसूरत और बेमिसाल मस्जिद दुनिया भर में हुज़ूर की दीनदारी और गरीबपरस्ती का डंका पीट देगी'', मुबारक खान ने झुककर आदाब बजाते हुए कहा। अकबर खुश होकर वहाँ से लौटे। अकबर महान थे। वे हमेशा अपनी प्रजा के दुख–सुख का ख्याल रखते थे। वे वेश बदलकर प्रजा के अंदरूनी हालात का पता लगाते रहते थे। उस दिन भी वे शाम होते ही वेश बदलकर गोमती के किनारे घूमने निकले।

शिक्षण–संकेत– कक्षा में बादशाह अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की चर्चा करें। मस्जिद और पुल की चर्चा करते हुए बच्चों को पाठ से जोड़ें तथा कहानी का सारांश बताएँ। फिर एक–एक बच्चे से कहानी का थोड़ा–थोड़ा भाग पढ़वाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ। अंत में पाठ में आए चरित्रों पर कक्षा में चर्चा करें।

घूमते–घूमते एक जगह अकबर को किसी औरत के रोने की आवाज सुनाई दी। अकबर आवाज की ओर चलते हुए गोमती के किनारे नाव के पास आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि नाव के पास एक अस्सी–नब्बे साल की काली और छोटे कद की बुढ़िया अपनी गठरी थामे पार जाने के लिए खड़ी है और कह रही है, ''इस अल्लाह के मारे दुष्ट मुंशी को तो देखो; अभी अच्छी तरह दिन भी नहीं छिपा है कि दफ्तर बंद करके यहाँ से भाग गया। जब मुंशी ही नहीं है तो मल्लाह यहाँ क्यों ठहरेगा? ये किस समय आते हैं और कब जाते हैं, कोई देखने वाला है? सूबेदार मुबारक खान को तो कर वसूलने से ही फुर्सत नहीं है। रिआया मरे या जिंदा रहे, इससे उसे क्या? खूबसूरत, शानदार मस्जिद बनाकर उसे तो बादशाह को खुश करने से मतलब है कि उसका ओहदा और बढ़े।'' बुढ़िया चुप होकर फिर बोलने लगी, ''मुंशी से शिकायत करो तो कहता है तुम रोज–रोज पार जाती ही क्यों हो? अरे, पार नहीं जाएँगे तो खाएँगे क्या? हमारा कुम्हार का धंधा कैसे चलेगा? गाँव में ग्राहक ही कहाँ मिलेगा भला? फिर क्या खुद खाएँगे और क्या बच्चों को खिलाएँगे? अरे, मेरी तो बहू भी नहीं है, जो बच्चों को सँभाल लेती। नन्हें पोते–पोती भूख से बिलख रहे होंगे। हाय अल्लाह! मैं क्या करूँ?'' बुढ़िया धाड़ मारकर जोर–जोर–से रोने लगी।

अकबर द्रवित हो गए। वे आगे बढ़कर बोले, ''रोओ नहीं माई! मैं तुम्हें उस पार पहुँचाए देता हूँ।'' बुढ़िया ने रोना बंद किया और गठरी लेकर खड़ी हो गई। ''चल भाई! तू ही मुझे पार ले चल।''

अकबर ने इससे पहले कभी नाव नहीं खेई थी। बुढ़िया बादशाह के चप्पू पकड़ने के ढंग को देखकर बोली, ''अरे, तुझे तो चप्पू भी ठीक से पकड़ना नहीं आता। तू पार क्या ले जाएगा?''

''मैं सँभालकर धीरे–धीरे चलाऊँगा माई, तू घबरा मत।'' अकबर ने बुढ़िया को धीरज बँधाया। बुढ़िया के सामने और कोई दूसरा चारा भी नहीं था। 'मरता क्या न करता' बुढ़िया नाव में बैठ गई। बादशाह जी–जान से नाव खेने लगे। मगर नाव कभी इधर जाती तो कभी उधर। बुढ़िया का पारा ऊपर चढ़ने लगा। वह चिल्लाकर बोली, ''अरे अनाड़ी! नाव उल्टी ले जा रहा है या सीधी। ऐसे चलकर तू हमें कल रात तक पार पहुँचाएगा। और यह भी पता नहीं कि नाव मझधार में ही डुबो दे। मेरे बच्चे इंतजार कर रहे होंगे और तू है कि नाव लेकर खिलवाड़ कर रहा है।''

''माई! सब्र तो कर,'' बादशाह ने कहा। किन्तु बुढ़िया बोले जा रही थी, ''असल में तो इन बातों का जवाबदेह बादशाह ही होता है। मगर बादशाह तो मुबारक खान की चिकनी–चुपड़ी बातों से ही खुश हो लेगा। उसे असलियत कौन बताएगा कि यहाँ मस्जिद की नहीं, एक पुल की जरूरत है। इस पुल के बिना, पारवाले लोगों को कितनी परेशानी होती है। अरे भाई, पुल न होने से उस पार कोई वैद्य या हकीम भी जाने को तैयार नहीं होता।''

बुढ़िया फिर चुप हो गई। थोड़ी देर बाद उसने फिर बड़बड़ाना शुरू कर दिया, ''सूबेदार मुबारक खान हमारा हाकिम है, लेकिन उसे ये सब देखने की फुर्सत कहाँ है! उसे तो बस अपने कर वसूलने से मतलब है। लोग कह रहे हैं, यहाँ ऐसी मस्जिद बनेगी जो दुनियाभर में अपना सानी आप होगी। सुना है, आज अकबर यहाँ आया है। मगर कहीं वह मुझे मिल जाता तो मैं

उसे बताती कि ओ दुनिया जहान के मालिक, अगर तू सचमुच ही लोगों का भला करना चाहता है तो पहले यहाँ पुल बनवा, मस्जिद नहीं।''

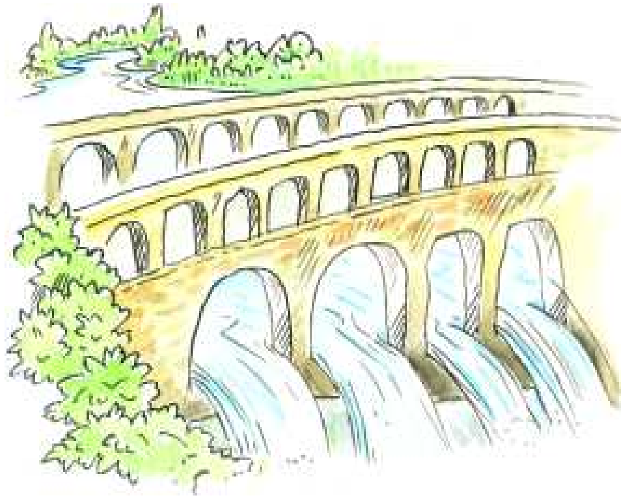

बुढ़िया देर तक इसी तरह बड़बड़ाती रही। चारों ओर अँधेरा छा गया। आसमान में तारे छिटकने लगे। अंत में नाव किनारे पर पहुँच ही गई। नाव में से लड़खड़ाती हुई बुढ़िया किसी तरह किनारे पर उतरी। अकबर ने उसे सँभालते हुए कहा, ''चलो माई! अँधेरा हो गया है। कहीं तुम्हें ठोकर न लग जाए, मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा देता हूँ।'' यह कहकर अकबर ने बुढ़िया को उसकी गठरी समेत गोदी में उठा लिया। बुढ़िया घर पहुँची; उसके घर में कुहराम मचा था। बच्चे बिलख–बिलखकर रो रहे थे। उनका रोना देखकर बुढ़िया को मल्लाह पर बड़ा गुस्सा आया। उसने उतरते–उतरते उसके दोनों गालों को जोर–से खरोंच दिया और बोली, ''आज तूने मेरे बच्चों को भूखा मार डाला।''

पहले तो बादशाह की आँखों में खून उतर आया, पर उन्होंने अपने को सँभाला और मन में सोचा, 'मुझे तो इस बुढ़िया का अहसानमंद होना चाहिए कि इसने मुझे सच्चाई और असलियत का एक सबक सिखाया है।' ''शुक्रिया'' कहकर बादशाह चुपचाप वहाँ से चले गए।

अगले दिन शीशे में अपने खूबसूरत शाहीलिबास और रत्नजड़ित आभूषणों के साथ, अपने गालों पर खरोंच के निशान देखकर बादशाह मुस्करा दिए।

उन्होंने जौनपुर में पहले पुल बनवाया, मस्जिद बहुत बाद में।

शब्दार्थ

साध	–	तीव्र इच्छा	न्यौता	–	निमंत्रण
झमेला	–	झंझट	मुश्किल	–	कठिनाई
बाँछें खिलना	–	खुश होना	सुकून	–	शांति
दीनदारी	–	धार्मिकता	आदाब बजाना	–	सलाम करना
मल्लाह	–	नाव खेनेवाला	बिलखना	–	फूट–फूटकर रोना
चप्पू	–	नाव खेने के डंडे			
मझधार	–	बीच धार			
सब्र	–	धैर्य			
हाकिम	–	अधिकारी			
सानी	–	मिसाल / बराबरी			

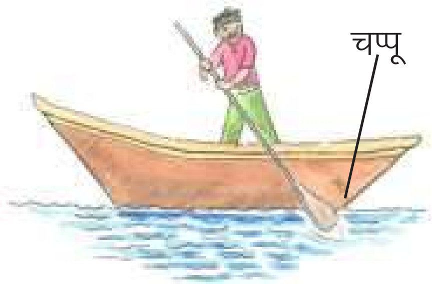

असलियत –	सच्चाई	लिबास –	पहनावा
अंदरूनी –	भीतरी	रिआया –	प्रजा
बेकरार –	बेचैन	ओहदा –	पद
अहसानमंद –	अहसान माननेवाला		
इंतजार करना–	रास्ता देखना, प्रतीक्षा करना		
दीन–ए–इलाही–	दीनहीन पर दया करनेवाला		
गरीब नवाज –	निर्धनों पर कृपा करनेवाला		
कुहराम –	दुखभरी चीख–पुकार		
बेमिसाल –	जिसकी कोई मिसाल/उदाहरण न हो		

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. बुढ़िया के घर में कुहराम क्यों मचा था?
2. शीशे में अपने गालों पर खरोंच के निशान देखकर बादशाह क्यों मुस्कराए?
3. सूबेदार मुबारक खान बादशाह को क्यों खुश करना चाहता था?
4. बुढ़िया का पारा क्यों ऊपर चढ़ने लगा?
5. पुल न होने से लोगों को क्या परेशानी होती थी?
6. बादशाह ने बुढ़िया को घर तक क्यों पहुँचाया?
7. बुढ़िया को बादशाह पर क्यों गुस्सा आया?
8. अगर बुढ़िया बादशाह को पहचान लेती तो उसका उनके प्रति व्यवहार कैसा होता?

प्रश्न 4. खाली जगह में क्या आएगा? कहानी पढ़कर कोष्ठक में से सही शब्द छाँटकर लिखो।

क. .... के पास बहुत कम समय था। (बुढ़िया/मुबारक खान/बादशाह)

ख. नक्शे को देखकर बादशाह की ....खिल गईं। (आँखें/बाँछें/बाहें)

ग. मुबारक खान ने .... आदाब बजाते हुए कहा। (अकड़कर/झुककर/तनकर)

घ. अरे ....! नाव उल्टी ले जा रहा है या सीधी। (खिलाड़ी/अनाड़ी/सवारी)

ङ. यह भी पता नहीं कि नाव को .... में ही डुबो दे। (नदी/सागर/मझधार)

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ चौकोर में से चुनकर लिखो और मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

बाँछें खिलना, धाड़ मारकर रोना, कुहराम मचना, आँखों में खून उतरना, जमीन–आसमान एक करना,

गुस्सा करना, पूरी कोशिश करना, जोर से रोना

खुश होना, दुख से रोना–चिल्लाना।

समझो

- **इन वाक्यों को पढ़ो–**

क. उसने बादशाह को मस्जिद का नक्शा दिखाया। (मुबारक खान ने)

ख. वह बरसों से बेकरार था। (मुबारक खान)

ग. उसका ओहदा और बढ़े। (मुबारक खान का)

घ. चल भाई! तू ही मुझे पार ले चल। (बादशाह)

ङ. उन्होंने जौनपुर में पहले पुल बनवाया, बहुत बाद में मस्जिद। (अकबर ने)

इन वाक्यों में नाम के स्थान पर 'उसने', 'वह', 'उसका', 'तू', 'उन्होंने' शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये सभी शब्द सर्वनाम हैं। **जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं वे सर्वनाम कहलाते हैं।**

प्रश्न 2. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करो।

वाक्य– मुबारक खान को तो कर वसूलने से ही फुर्सत नहीं है।

क. बुढ़िया ने रोना बंद कर दिया।

ख. बादशाह मुबारक खान के व्यवहार पर प्रसन्न हुए।

ग. बादशाह ने मुबारक खान से पुल बनवाने के लिए कहा।

- "बुढ़िया को और कोई सहारा न था।" यह निषेधात्मक वाक्य है। वाक्य का भाव बिना बदले इसे विधिवाचक वाक्य में इस प्रकार लिखा जाएगा– बुढ़िया असहाय थी।

प्रश्न 3. इन वाक्यों को विधिवाचक वाक्यों में इस प्रकार बदलो जिससे उनके भाव न बदलें।

क. मैं झूठ नहीं बोलता।

ख. वह बदसूरत नहीं है।

ग. मैं आज कक्षा में उपस्थित नहीं रहूँगा।

घ. चंद्रशेखर आज़ाद कायर नहीं थे।

प्रश्न 4. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखो–

नक्शा, मुश्किल, मौका, ख्याल, खुश, हालात, दुनिया, फुरसत।

- क. सब–के–सब बेमिसाल हैं।

  ख. वह न्यौते–पर–न्यौता देता चला आ रहा था।

  'सब–के–सब' का अर्थ है, संपूर्ण या पूरा। न्यौते–पर–न्यौता का अर्थ है, लगातार न्यौता देना।

प्रश्न 5. 'प्रश्न–पर–प्रश्न', 'धमकी–पर–धमकी', 'पेड़–का–पेड़', 'घर–का–घर', शब्द समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

- क. बेशक, नक्शा बहुत खूबसूरत है।

  ख. सब–के–सब बेमिसाल हैं।

  'शक' और 'मिसाल' में 'बे' जोड़कर 'बेशक' और 'बेमिसाल' शब्द बने हैं। 'बेशक' का अर्थ है जिसमें कोई शक न हो और 'बेमिसाल' का अर्थ है जिसकी मिसाल (उदाहरण) न हो।

प्रश्न 6. 'बे' जोड़कर कोई दो अन्य शब्द बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

रचना

- पुल बन जाने से नागरिकों को क्या लाभ हुआ होगा– इस विषय पर 10 वाक्य लिखो।
- नदी पार करने के लिए उपयोग में आने वाले साधनों के नाम लिखो।

योग्यता विस्तार

- कहानी को नाटक के रूप में तैयार करके कक्षा में प्रस्तुत करो।
- जनहित में मंदिर या मस्जिद के स्थान पर सड़क या पुल में तुम किसे महत्वपूर्ण मानते हो? इस बात पर आपस में चर्चा करो।
- इस कहानी को निम्न बिंदुओं के आधार पर तैयार कर कक्षा में प्रस्तुत करो –

  1. पात्र
  2. पात्रों का संवाद
     - अकबर का संवाद
     - बुढ़िया का संवाद
     - सुबेदार मुबारक खान का संवाद
  3. अभिनय करो –
     - बुढ़िया के रोने का
     - अकबर के चापू चलाने का

5HS7K1

5HU8J4

पाठ–21

सुनता के डोर

पाठ परिचय– सियान मन कहिथें के मिल–जुर के, सुनता ले रेहे म मुसकुल काम बन जाथे, अउ बड़े–बड़े बिपत ह घलो टर जाथे। उही बात ल ये कहानी म बताय गेहे। परेवा, मुसवा, कऊँवा, केछवा, अउ मिरगा मन अक्कल लगा के सुनता ले अपन परान ल बचाइन। ए पाठ म कहना इही हे के लइका मन म मिलजुर के रहे के अउ सुनता के भाव जागय।

एक जंगल म परेवा अउ मुसवा रहँय। दुनो झन सँगवारी रहिन। परेवा अउ मुसवा के मितान बनना ह समझ म नइ आवत हे फेर मन मिल जाथे तब अइसन बात के बारे म कोनो नइ सोचय। मुसवा अउ परेवा एक–दूसर ल अतका जादा परेम करँय, जइसन सग भाइ मन करथें। उँकर मया ल देख के कउँवा मन म सोंचथे–''ये दुनो झन मोर सँगवारी बन जाँय त बढ़िया हो जातिस, काबर के सँगवारी मन बेरा–बेरा म काम आथे'', अउ दुनो झन ल मितान बनाय बर ठान लिस। ओ मुसवा के तीर म जाके कहिस ''मुसवा भइया ! तोर अउ परेवा के मितानी ल देखेंव त मोरो अंतस म मया जाग गे। तोर ले बिनती करत हँव, तैं ह मोला अपन मितान बना लेते त बढ़िया हो जातिस।''

मुसवा– '' फेर तैं ह कउँवा अउ मँय मुसवा, भला कइसे निभ सकत हन ? काबर के मुसवा अउ कउँवा म तो जनमजात दुस्मनी हे, फेर तोर उपर बिसवास कइसे करँव ? नहीं भाई, दुरिहा रह उही ह बने हे।''

कउँवा– ''मोर उपर भरोसा कर, मैं तोर अहित नइ होवन देवँव। तैं ह मोला अपन मितान बना लेबे त अपन आप ल मय भागमानी समझहूँ अउ कहूँ मोला अपन मितान नइ बनाय त बिन खाय पिये मर जाहूँ।''

शिक्षण संकेत– पाठ ल पढ़ाय के पहिली गुरुजी ह चिरइ–चिरगुन, जीव–जंतु मन के नाँव, उँकर सुभाव के बारे म लइका मन ले गोठ–बात करँय फेर शुद्ध उच्चारण करके पढँय, तेकर पाछू लइका मन ल पढ़वावँय। सुनता के अउ कोनो किस्सा

सिरतोन बात आय, कउनो कउँवा के बोली लबारी होतिस त कउँवा के अंतस नइ डोलतिस। कउँवा सच्चा रहिस। मुसवा ल कउँवा के उपर बिसवास होगे अउ कउँवा ह ओकरे संग पेड़ म रहे लागिस। अब तो तीन मितान जुरिया गें—परेवा, मुसवा अउ कउँवा। ये तीनो सँगवारी मजा म रहे लगिन।

थोरिक दिन बाद उहाँ दुकाल परिस। अन्न के एक दाना मिलना घलो मुसकुल होगे। अइसन हालत म देख के कउँवा ह मुसवा अउ परेवा ल किहिस— "सँगवारी हो अब इहाँ जादा दिन ले रहना मुस्कुल हे। मोर बिचार म ये जघा ल छोड़ के आन डहर चल देना चाही। इहाँ ले दुरिहा म दुसर हरियर—हरियर जंगल अउ तरिया हे, उहाँ जाके रहिबो। ओ तरिया म मोर एक झन मितान रहिथे। जउन ह बेरा—बेरा मँदद करही अउ थोरको दुख नइ होन दय।"

पहिली तो दुनो झन नइ मानिन, फेर कउँवा ह जिद करिस, तब परेवा अउ मुसवा मन जाय बर राजी होगें। मुसवा ल कउँवा ह अपन चोंच म उठा लिस अउ परेवा हवा म उड़ावत ओकर संग चल दिस। तीनों तरिया तीर पहुँचगें तब कउँवा के मितान केछुवा सन उँकर भेंट होइस। केछुवा अपन मितान मन के मान—गउन करे बर कोनो परकार के कमी नइ करिस।

एक दिन ये चारों मितान गोठियात रिहिन तभे एक ठन मिरगा दउँड़त—दउँड़त तीर म आ गे। ओ ह हँफरत—हँफरत कहिस—"कुछू जानत हव, बड़ जबर दुख अवइया हे, बाँचे बर हे त तुरते भाग चलव।"

केछुवा ह कहिस— "अरे भइ कुछ बता तो भला का होवइया हे ? जनउला तो नइ जनावत हस।" मिरगा कहिस— "इहाँ ले थोरिक दुरिहा म नँदिया के करार म एक झन राजा के सेना हे अउ काली ओ सेना ह इही डहर ले जाही सुने हँव । अब तुमन जानव भई। अइसन हालत म हमर इहाँ रहना परान देवउल आय।"

अतका बात ल सुन के सबो मितान संसो म परगे। ए तो जानत हन सेना जेती ले जाही, रउर मचा देही। काबर के राजा के सेना अतलँगहा होथे। सबोझन गुनत—गुनत थक गें फेर कोनो उदीम नइ सूझिस। आखरी म कउँवा ह किहिस— "सँगवारी हो, मोर मन म एक ठन बात आए हे। ये जंगल ल छोड़ के जाए म हमर भलइ हे, जियत रहिबो त इहाँ अउ आ जबो।

अउ सबो सँगवारी मन चल दिन। केछुवा अउ मुसवा तो भुइयाँ म रेंगत—रेंगत जावत रहँय, परेवा अउ कउँवा उड़त—उड़त उँकर सँग देवत रहँय। केछुवा पानी म रहइया जीव आय एखर सेती भुइयाँ म रेंगना अड़बड़ मुसकुल होगे। फेर इहाँ तो जीव ला बचाय के सवाल रहय। एक झन शिकारी के आँखी म केछुवा हा दिख गे। शिकारी ह तुरते—तुरत केछुवा ल फाँदा म फँसा डारिस। केछुवा ल शिकारी के फाँदा म फँसत देख के चारों सँगवारी मन रोय लगिन अउ

सन्सो करे लगिन। गजब गुने के बाद कउँवा किहिस– "सँगवारी हो! एक ठन उदिम मोर अंतस म आए हे, जेकर ले कछुवा फाँदा ले उबर जाही।" सबो झन केहे लगिन– "का बात आय ? तुरते बता।"

कउँवा– "बात ए हे, मिरगा ह नँदी के तीर म मुरदा बरोबर सुत जाय, अउ मैं ओकर देह म देखाए बर चोंच मारहूँ। शिकारी ह मिरगा ल उठाय बर केछुवा ल भुइयाँ म रख दिही। जतका बेरा म ओहर मिरगा तक पहुँचही ओतका बेरा म मुसवा ह केछुवा के फाँदा ल काट के निकाल दिही। केछुवा झट ले पानी म उतर जाही अउ मुसवा बिल म घुसर जाही। ओती मिरगा के तीर म शिकारी आए ल धरही त मँय उड़ा जाहूँ, अतके म मिरगा उठ के भाग जाही। फेर शिकारी के एक्को उदिम काम नइ करय।" अइसन करे बर सबो झन एके सुनता होगे।

मिरगा ह बताय काम ल करिस। शिकारी मिरगा ल मर गे हे जानके जाल म फँसे केछुवा ल भुइयाँ म फेंक दिस अउ मिरगा ल लाए बर नँदी के तीर म चल दिस। पहिली बनाय उदिम के मुताबिक मुसवा ह फाँदा ला काट दिस अउ केछुवा ह पानी म कूद गे। शिकारी के हाथ ले शिकार निकलगे। शिकारी देखत रहिगे। ओ हर फाँदा ल सकेलिस अउ घर चल दिस। अइसने जुरमिल के सुनता म अउ सँघरा रहे म अड़बड़ मुसकुल काम घलो बन जाथे।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने–								
सँगवारी	–	साथी	परेवा	–	कबूतर	मुसवा	–	चूहा
परेम	–	प्रेम	सुग्घर	–	अच्छा	मुरूख	–	मूर्ख
अंतस	–	हृदय	दुकाल	–	अकाल	मितान	–	दोस्त
दुरिहा	–	दूर	थोरिको	–	थोड़ा सा	घाटा	–	हानि
लबारी	–	झूठ	जनमजात	–	जन्म से ही	दूभर	–	कठिन
मुसकुल	–	कठिन	उत्ता धुर्रा	–	जल्दी–जल्दी	थोरिक	–	थोड़े
तरिया	–	तालाब	ठानना	–	निश्चय करना	पीरा	–	दर्द
तुरते	–	तुरंत	परान देवउल	–	खतरे में डालना	अतलँगहा	–	उत्पाती / खतरनाक
उदिम	–	उपाय	आन डहर	–	दूसरी तरफ	झटले	–	जल्दी
भलइ	–	भलाई	रहवईया	–	रहने वाला	जुर मिल	–	एक साथ
संसो	–	चिंता	रउर	–	तबाही			

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि

गुरुजी ह कक्षा के लइका मन ल दू दल म बाँट के एक दूसर ल मुँहअखरा प्रश्न पूछे ल कहँय–

जइसे– **क.** कउँवा परेवा ल कइसे बिसवास देवइस ?

ख. चारों मितान गोठियावत रहिथें त मिरगा ह आके का कहिथे ?

ग. मुसवा ह फाँदा ल नइ काटतिस त का होतिस ?

घ. सिकारी के मन म का बात आइस ?

बोध प्रश्न

प्रश्न 1.खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

क. परेवा अउ मुसवा ल देख के कउँवा के मन म का बिचार आइस ?

ख. मुसवा के तीर म जाके कऊँवा हा ओला का कहिस ?

ग. मुसवा ह कउँवा ल मितान काबर नइ बनावँव कहिस ?

घ. मुसवा ह कउँवा ल मितान कइसे बना लिस ?

ड. दुकाल परिस त कउँवा ह अपन सँगवारी मन ल कहाँ लेगिस, अउ उहाँ कोन मिलिस ?

च. नँदिया के करार म कोन मन ठाढ़े रिहिस, अउ ओला सबो सँगवारी मन काबर डर्रावत रहिन ?

छ. केछुवा ल शिकारी के फाँदा ले उबारे बर कउँवा ह का उदिम करिस ?

प्रश्न 2. कहानी ल पढ़के बतावव– ए गोठ ल कोन ह कोन ल किहिस ?

1. मँय ह तोर विनती करत हँव तँय ह मोला अपन मितान बना लेते त बढ़िया हो जातिस।

2. बड़े जबर दुख अवइया हे, बाँचे बर हे त तुरते भाग चलव।

3. ये जंगल ल छोड़ के जाय म हमर भलइ हे, जियत रहिबो त इहाँ अउ आ जाबो।

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखे वाक्य ल पढ़व अउ बिचार के लिखव– का होतिस ?

1. कउँवा ह सँग म नइ रहितिस।

2. शिकारी ह फाँदा ल फेंक के मिरगा मेर नइ जातिस।

प्रश्न 4. सुनता के डोर पाठ म तुमन ल काकर काम अउ गोठ ह बने लागिस अउ काबर ? अपन बिचार पाँच वाक्य म लिखव।

1. तुमन कोन–कोन छत्तीसगढ़ी कहावत ल जानथव, सोचव अउ लिखव।

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण

गतिविधि

गुरुजी पाठ के चार–पाँच वाक्य ल बने साफ–साफ पढ़ँय। लइका मन ओला अपन कापी म लिखहीं। ओकर बाद गुरुजी ह सही शब्द ल श्यामपट म लिख दँय जेखर ले लइका मन ल सही शब्द के जानकारी हो जाय।

प्रश्न 1. खाल्हे लिखाय वाक्य म सहीं–सहीं विराम चिह्न लगावव–

पहिली तो दुनो झन नइ मानिन फेर कउँवा ह जिद करिस त परेवा अउ मुसवा मन जाय बर राजी होगे। मुसुवा ल कऊँवा ह अपन चोंच म उठा लिस अउ परेवा हवा म उड़ावत ओकर संग चल दिस।

प्रश्न 2. संज्ञा के सँग 'मन' प्रत्यय लगा के वचन बदलव–

जइसे– मैं तोर कभू अनहित नइ होन देवव।

उत्तर–मैं तुँहरमन के कभू अनहित नइ होन देवँव।

1. मिरगा दँउड़त आइस।
2. केछुवा ल फाँदा म फँसा डारिस।
3. मुसवा के तिर म चल दिस।
4. मछरी तउँरत हे।

प्रश्न 3. पढ़व अउ समझव–

5N23LN

क. मोला अपन मितान बना लेबे।

ख. बिन खाय –पिये मर जाहूँ।

ग. मुसवा ह जाय बर राजी होगे।

घ. चारो सँगवारी मन रोए लागिन।

उपर म लिखाय वाक्य मन ल चेत लगा के पढ़व अउ रेखा खिंचाय शब्द मन ल गुनव "जेन शब्द मन ले कउनो बुता/काम होय के अउ करे के पता लगथे, ओला क्रिया केहे जाथे।" पाठ म आय पाँच क्रिया शब्द छाँट के लिखव।

प्रश्न 4. खाली जघा म लकीर खिंचाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाले शब्द भरव।

क. परेवा अउ मुसवा मितान आय फेर कउँवा ....आय।

ख. मिरगा अउ कउवा तीर म चल दिस त केछवा ह ....म रिहिस।

ग. तोर मेर कमती पइसा हे मोर मेर ....पइसा हे।

घ. घोड़ा अतलँगहा होथे, बइला ह ....होथे।

ङ. सुनता म बड़े–बड़े काम बन जाथे अउ ....म बिगड़ जथे।

;kX;rk foLrkj

ये कहानी पाठ ल नाटक म बदल के अपन गुरुजी के मदद ले कक्षा म खेलव।

jpuk

1. अपन गाँव/घर के सियनहा मनखे मन ल पूछ के अइसने सुनता के कहानी छत्तीसगढ़ी म लिखव।
2. चिरइ–चिरगुन अउ जीव–जन्तु के कहानी पंचतंत्र के किताब म खोजव अउ पढ़व।

पाठ–22

महापुरुषों का बचपन

— लेखक मंडल

हमारे जीवन में बचपन सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। इसी समय भविष्य की नींव पड़ती है। महान लोगों के बचपन में घटी घटनाएँ प्रेरणा का काम करती हैं। ऐसी घटनाएँ बड़ी स्वाभाविकता से बालमन को सही दिशा में ले जाने में अपनी भूमिका निभाती हैं।

इस पाठ में हम सीखेंगे – पढ़कर अर्थ ग्रहण करना, विभक्ति चिह्न, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग, स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्द।

पहला प्रसंग

शाहजी अपने आश्रयदाता, बीजापुर के सुल्तान के दरबार में जाने की तैयारी कर रहे थे। उनके मन में विचार आया, क्यों न शिवा को भी आज अपने साथ ले चलूँ? आखिर उसे भी तो एक–न–एक दिन इसी दरबार में नौकरी करनी है। दरबार के नियम–कायदों का ज्ञान भी उसे होगा। उन्होंने आवाज लगाई– ''शिवा! तुझे भी आज मेरे साथ दरबार में चलना है। जल्दी तैयार हो जा।''

पिता के आज्ञाकारी पुत्र ने आदेश सुना। वह तुरंत तैयार हो गया। पिता–पुत्र दोनों दरबार में पहुँचे। शाहजी ने सुल्तान के सामने झुककर तीन बार कोर्निश की। फिर वे अपने पुत्र की ओर मुड़कर बोले, ''बेटे ! ये सुल्तान हैं, हमारे अन्नदाता हैं, इन्हें प्रणाम करो।'' लेकिन निडर बालक ने कहा, ''पिता जी! मेरी पूजनीय तो मेरी माँ भवानी हैं। मैं तो उन्हीं को प्रणाम करता हूँ।''

पिता ने पुत्र की ओर आँखें तरेरकर देखा, फिर सुल्तान को संबोधित करते हुए बहुत विनम्र स्वर में कहा, ''हुजूर! यह अभी बच्चा है। दरबार के तौर–तरीके नहीं जानता। इसे माफ कर दीजिए।''

शिक्षण–संकेत– बच्चों से 'पूत के पाँव पालने में' लोकोक्ति का अर्थ पूछें। इसका अर्थ समझाएँ और बताएँ कि महापुरुषों का चरित्र उनके बचपन से ही आभासित होने लगता है। भगतसिंह, आजाद, गोपालकृष्ण गोखले, चंद्रगुप्त मौर्य जैसे महापुरुषों के बचपन की घटनाएँ सुनाएँ और बताएँ कि शिवाजी, गांधी, तिलक की महानता उनके बचपन से ही प्रकट होने लगी थी। शिक्षक प्रेरक प्रसंग सुनाएँ, समूह में पढ़ने के लिए कहें तथा घटनाओं पर चर्चा करें।

घर लौटकर जब पिता ने अपने पुत्र को उसके व्यवहार के लिए डाँटा तो उसने फिर कहा, ''पिता जी, माता–पिता, गुरु और माँ भवानी के अलावा यह सिर और किसी के आगे नहीं झुक सकता।'' निडर बालक की बात सुनकर पिता जी सन्न रह गए।

दूसरा प्रसंग

स्कूल में कक्षाएँ लग रही थीं। निरीक्षण के लिए शिक्षा विभाग के निरीक्षक आनेवाले थे। नियत समय पर वे आए। एक कक्षा में विद्यार्थियों को उन्होंने पाँच शब्द लिखने को दिए। उनमें से एक शब्द था 'कैटल' (KETTLE)। मोहन ने यह शब्द गलत लिखा। अध्यापक ने अपने बूट से ठोकर देकर इशारा किया कि आगे बैठे लड़के की स्लेट देखकर शब्द ठीक कर ले। मोहन ने नकल नहीं की। वह तो सोचता था कि परीक्षा में अध्यापक इसलिए होते हैं कि कोई लड़का नकल न कर सके। मोहन को छोड़कर सब लड़कों के पाँचों शब्द सही निकले। उस पर अध्यापक भी नाराज हुए लेकिन उसने दूसरों की नकल करना कभी न सीखा।

तीसरा प्रसंग

विद्यालय लगा था, लेकिन एक कक्षा में कोई शिक्षक नहीं थे। उस कक्षा के कुछ विद्यार्थी बाहर टहल रहे थे, कुछ कक्षा में बैठे मूँगफली खा रहे थे। वे मूँगफली के छिलके वहीं कक्षा में फेंक रहे थे। शिक्षक कक्षा में आए और कक्षा में मूँगफली के छिलके बिखरे देखकर बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने पूछा, ''कक्षा में मूँगफली के छिलके किसने फैलाए हैं?'' किसी विद्यार्थी ने कोई जवाब नहीं दिया। शिक्षक ने दोबारा वही प्रश्न कठोरता से किया, किन्तु फिर भी किसी छात्र ने कोई उत्तर नहीं दिया। अब की बार शिक्षक ने हाथ में बेंत लेकर कहा, ''अगर सच–सच नहीं बताया तो सबको मार पड़ेगी।'' वे एक छात्र के पास पहुँचे और उससे बोले, '' मूँगफली के छिलके किसने फेंके हैं?''

''जी, मुझे नहीं मालूम'', छात्र ने उत्तर दिया।

'सटाक्, सटाक्', दो बेंत उसके हाथ में पड़े। छात्र तिलमिलाकर रह गया। शिक्षक दूसरे, तीसरे, चौथे छात्र के पास पहुँचे। सभी से वही प्रश्न किया, सभी का उत्तर था– ''मुझे नहीं मालूम।'' सबके हाथों पर 'सटाक्, सटाक्' की आवाज हुई।

अब शिक्षक पाँचवें छात्र के पास पहुँचे। उससे भी वही प्रश्न किया। छात्र ने उत्तर दिया, ''श्रीमान् जी! न मैंने मूँगफली खाई, न छिलके फेंके। मैं दूसरों की चुगली नहीं करता, इसलिए नाम भी नहीं बताऊँगा। मैंने कोई अपराध नहीं किया है, इसलिए मैं मार भी नहीं खाऊँगा।''

शिक्षक छात्र को लेकर प्रधानाध्यापक के पास पहुँचे। प्रधानाध्यापक ने सारी बात सुनकर बालक को विद्यालय से निकाल दिया। बालक ने घर जाकर पूरी घटना अपने पिता जी को कह सुनाई। दूसरे दिन पिता जी बालक को लेकर विद्यालय में पहुँचे। तेजस्वी पिता ने प्रधानाध्यापक से कहा, "मेरा पुत्र असत्य नहीं बोलता। वह घर के अतिरिक्त बाजार की कोई चीज भी नहीं खाता। उसका आचरण बहुत संयमित है। मैं अपने पुत्र को आपके विद्यालय से निकाल सकता हूँ किन्तु निरपराध होने पर उसे दंडित होते नहीं देख सकता।" प्रधानाध्यापक शांत हो गए।

यही बालक आगे चलकर लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने नारा दिया था– "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूँगा।"

शब्दार्थ

आश्रयदाता	–	आश्रय देनेवाला	आँखें तरेरना	–	गुस्सा होना
सन्न रह जाना	–	आश्चर्य से मूर्ति के समान हो जाना			
नियत	–	पहले से तय			
तेजस्वी	–	....	निरीक्षण	–	....
कोर्निश	–	झुककर सलाम करना			

ऊपर लिखे शब्दों में कुछ शब्दों के अर्थ नहीं दिए गए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर शब्दों के सामने लिखो।

(जाँच करना, तेजयुक्त)

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो–

1. शाहजी कहाँ जाने की तैयारी कर रहे थे ?
2. बालक मोहन ने कौन–सा शब्द गलत लिखा था?
3. निडर बालक शिवा की बात सुनकर पिता पर क्या प्रभाव पड़ा होगा?
4. कक्षा के पाँचवें छात्र ने जवाब में क्या कहा?
5. तेजस्वी पिता ने प्रधानाध्यापक से अपने पुत्र के संबंध में क्या कहा?

प्रश्न 2. किसने, किससे, कब कहा?

क. "तुझे भी मेरे साथ दरबार में चलना है।"

ख. "मेरा पुत्र असत्य नहीं बोलता।"

ग. "हुजूर! यह अभी बच्चा है।"

घ. "मैं दूसरों की चुगली नहीं करता।"

सोचो और लिखो–

प्रश्न 3. क. शिवाजी अपने पिता का सम्मान करते थे पर उन्होंने दरबार में अपने पिता का आदेश नहीं माना। उन्होंने ऐसा क्यों किया?

ख. बालक मोहन ने अध्यापक का इशारा पाकर भी नकल नहीं की। यदि तुम मोहन की जगह पर होते तो क्या करते?

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. नीचे लिखे शब्दों और मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो–

कोर्निश करना, तिलमिलाना, आँखें तरेरना, सन्न रह जाना।

समझो

- 'दाता' शब्द का अर्थ है 'देनेवाला'।

प्रश्न 2. दिए गए शब्द–समूहों के लिए 'दाता' शब्द का प्रयोग करते हुए शब्द लिखो

जैसे– दान देने वाला = दानदाता।

आश्रय देनेवाला, अन्न देनेवाला, जन्म देनेवाला, कर देनेवाला, शरण देनेवाला।

प्रश्न 3. निम्नलिखित अवतरण में जहाँ–जहाँ अशुद्धियाँ हों, उन्हें शुद्ध कर अवतरण पुनः लिखो।

राजेन्द्र परसाद अपने गाँव जीरादेई जा रहा था। नोका मैं एक मूसाफीर ने सीगरेट सूलगाई। उसके धूएँ से राजेन्द्र बाबू को खँसी उभर आई। जब सीगरेट का गंध–असहय हो गया राजेन्दर बाबु ने उस मूसाफीर से पूछा, ''यह सीगरेट आपका ही है न?'' जवाब मीला, ''मेरी नहीं तो क्या आपकी है। राजेन्दर बाबु बोले, ''तो यह धूँआ आपका ही होगा। इसे आप अपने पास ही रखिए।''

प्रश्न 4. इन उदाहरणों के समान पर, की, में, ने और को का प्रयोग करते हुए एक–एक वाक्य बनाओ।

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्दों को अलग–अलग छाँटकर लिखो।

शीशी, मेंढक, इलायची, युवक, मोटी, बूढ़ा, मुहल्ला, घास।

रचना

क तुमने अपने माता–पिता से व्यवहार की कौन–सी अच्छी बातें सीखी हैं ? कोई पाँच बातें लिखो।

ख घर के समान ही विद्यालय की स्वच्छता का ध्यान रखने के लिए क्या–क्या करना चाहिए?

गतिविधि

- हमारे देश के महापुरुषों ने हमें अनेक प्रेरक नारे दिए हैं। ऐसे पाँच महापुरुषों के नाम और उनके दिए नारे लिखो व उन्हें अपनी कक्षा की दीवारों पर लगाओ।

- **नीचे लिखे अवतरण को पढ़ो और इसका सारांश अपने शब्दों में लिखो।**

  एक बार महाराज रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे कि सामने से एक पत्थर आकर उन्हें लगी। सिपाहियों ने चारों ओर नजर दौड़ाई तो एक बुढ़िया दिखाई दी। उसे गिरफ्तार करके महाराज के सामने हाजिर किया गया।

  बुढ़िया महाराज को देखते ही डर से काँप उठी। बोली, ''सरकार! मेरा बच्चा कल से भूखा था। घर में खाने को कुछ न था। पेड़ पर पत्थर मार रही थी कि कुछ बेर तोड़कर उसे खिलाऊँ किन्तु वह पत्थर भूल से आपको आ लगा। मैं बेगुनाह हूँ। सरकार! मुझे क्षमा किया जाए।" महाराज ने कुछ देर सोचा और वे बोले, ''बुढ़िया को एक हजार रुपये देकर सम्मान सहित छोड़ दिया जाए।''

  यह सुन सारे कर्मचारी अचंभित रह गए। एक ने सरकार से पूछ ही लिया, ''महाराज! जिसे दंड दिया जाना चाहिए, उसे रुपये दिए जाएँगे?'' रणजीत सिंह बोले, ''यदि निर्जीव वृक्ष पत्थर लगने पर मीठा फल देता है तो रणजीत सिंह उसे खाली हाथ कैसे लौटा दे?''

योग्यता–विस्तार

5NCZHE

- तुम महापुरुषों के बारे में जानकारी एकत्रित करो जिनके कार्यों से तुम अधिक प्रभावित या प्रेरित हो।
- किसी भी महापुरुष के बारे में निम्न बिन्दुओं पर जानकारी एकत्रित कर लिखो–

  1. महापुरुष का नाम 2. जन्म स्थान 3. शिक्षा
  4. व्यवसाय 5. उल्लेखनीय कार्य।

- क्या कभी तुम्हारे साथ ऐसा हुआ है कि तुम्हारे गलती की सजा तुम्हें मिली हो।
- महापुरुषों को उनके कार्यों के कारण जाना जाता है तुमको भी सभी लोग जाने इसके लिए तुम क्या–क्या करोगे अपने शब्दों में लिखो।
- नकल करना किसे कहते हैं ? क्या नकल करना अच्छा होता है।

पाठ–23

गुरू और चेला

गुरू एक थे और था एक चेला,
चले घूमने पास में था न धेला ।
चले चलते–चलते मिली एक नगरी,
चमाचम थी सड़कें चमाचम थी डगरी।

मिली एक ग्वालिन धरे शीश गगरी,
गुरू ने कहा तेज ग्वालिन न भर री।
बता कौन नगरी, बता कौन राजा,
कि जिसके सुयश का यहाँ बजता बाजा।

कहा बढ़के ग्वालिन ने महाराज पंडित,
पधारे भले हो यहाँ आज पंडित।
यह अंधेर नगरी है अनबूझ राजा,
टके सरे भाजी, टके सेर खाजा।

गुरू ने कहा–जान देना नहीं है,
मुसीबत मुझे मोल लेना नहीं है।
न जाने की अंधेर हो कौन छन में?
यहाँ ठीक रहना समझता न मन में।

गुरू ने कहा किंतु चेला न माना,
गुरू को विवश हो पड़ा लौट जाना।
गुरूजी गए, रह गया किंतु चेला,
यही सोचता हूँगा मोटा अकेला।

चला हाट को देखने आज चेला,
तो देखा वहाँ पर अजब रेल–पेला।
टके सेर हल्दी, टके सेर जीरा,
टके सेर ककड़ी टके सेर खीरा।

टके सेर मिलती थी रबड़ी मलाई,
बहुत रोज उसने मलाई उडाई।
सुनो और आगे का फिर हाल ताजा।
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा।

बरसता था पानी, चमकती थी बिजली,
थी बरसात आई, दमकती थी बिजली।
गरजते थे बादल, झमकती थी बिजली,
थी बरसात गहरी, धमकती थी बिजली।

गिरी राज्य की एक दीवार भारी,
जहाँ राजा पहुँचे तुरंत ले सवारी।
झपट संतरी को डपट कर बुलाया,
गिरी क्यों यह दीवार, किसने गिराया?

कहा संतरी ने–महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, ना मेरा करतब!
यह दीवार कमजोर पहले बनी थी,
इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी।

खता कारगीर की महाराज साहब,
न इसमें खता मेरी, या मेरा करतब!
बुलाया गया, कारीगर झट वहाँ पर,
बिठाया गया कारीगर झट वहाँ पर,

कहा राजा ने—कारीगर को सजा दो,
खता इसकी है आज इसको सजा दो।
कहा कारीगर ने, जरा की न देरी,
महाराज! इसमें खता कुछ न मेरी।

यह भिश्ती की गलती यह उसकी शरारत,
किया गारा गीला उसी की यह गफलत।
कहा राजा ने जल्द भिश्ती बुलाओं।
पकड़ कर उसे जल्द फाँसी चढ़ाओ।

चला आया भिश्ती, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने—इसमें खता कुछ न मेरी।
यह गलती है जिसने मशक को बनाया,
कि ज़्यादा ही जिसमें था पानी समाया।

मशकवाला आया, हुई कुछ न देरी,
कहा उसने इसमें खता कुछ न मेरी।
यह मंत्री की गलती है, मंत्री की गफलत,
उन्हीं की शरारत, उन्हीं की हिमाकत।

बड़े जानवर का था चमड़ा दिलाया,
चुराया न चमड़ा मशक को बनाया।
बड़ी है मशक खूब भरता है पानी,
ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी।

है मंत्री की गलती तो मंत्री को लाओं,
हुआ हुक्म मंत्री को फाँसी चढ़ाओं।
चले मंत्री को लेके जल्लाद फौरन,
चढ़ाने को फाँसी उसी दम उसी क्षण।

मगर मंत्री था इतना दुबला दिखता,
न गर्दन में फाँसी का फंदा था आता।
कहा राजा ने जिसकी मोटी हो गर्दन,
पकड़ कर उसे फाँसी दो तुम इसी क्षण।

चले संतरी ढूँढने मोटी गर्दन,
मिला चेला खाता था हलुआ दनादन।
कहा संतरी ने चलें आप फौरन,
महाराज ने भेजा न्यौता इसी क्षण।

बहुत मन में खुश हो चला आज चेला,
कहा आज न्यौता छकूँगा अकेला।।
मगर आके पहुँचा तो देखा झमेला,
वहाँ तो जुड़ा था अजब एक मेला।

यह मोटी है गर्दन, इसे तुम बढ़ाओ,
कहा राजा ने इसको फाँसी चढ़ाओं!
कहा चेले ने–कुछ खता तो बताओ,
कहा राजा ने–'चुप' न बकबक मचाओ।

मगर था न बुद्धू–था चालाक चेला,
मचाया बड़ा ही वहीं पर झमेला!!
कहा पहले गुरू जी के दर्शन कराओ,
मुझे बाद में चाहे फाँसी चढ़ाओ।

गुरूजी बुलाए गए झट वहाँ पर,
कि रोता था चेला खड़ा था जहाँ पर।
गुरू जी ने चेले को आकर बुलाया,
तुरंत कान मे मंत्र कुछ गुनगुनाया।

झगड़ने लगे फिर गुरू और चेला,
मचा उनमें धक्का बड़ा रेल–पेला।
गुरू ने कहा–फाँसी पर मैं चढूँगा,
कहा चेले ने–फाँसी पर मैं मरूँगा।

हटाए न हटते अड़े ऐसे दोनों,
छुटाए न छुटते लड़े ऐसे दोनों।
बढ़े राजा फौरन कहा बात क्या है?
गुरू ने बताया करामात क्या है।

चढ़ेगा जो फाँसी मूहरत है ऐसी,
न ऐसी मूहरत बनी बढ़िया जैसी।
वह राजा नहीं, चक्रवर्ती बनेगा,
यह संसार का छत्र उस पर तनेगा।

कहा राजा ने बात सच गर यही
गुरू का कथन, झूठ होता नहीं है
कहा राजा ने फाँसी पर मैं चढ़ूँगा
इसी दम फाँसी पर मैं ही टँगूँगा।

चढ़ा फाँसी राजा बजा खूब बाजा
प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा
बजा खूब घर–घर बधाई का बाजा।
थी अंधेर नगरी, था अनबूझ राजा।।

सोहन लाल द्विवेदी

टके की बात

1. टका पुराने जमाने का सिक्का था। अगर आजकल सब चीजें एक रूपया किलों मिलने लगें तो उससे किस तरह के फायदे और नुकसान होंगे?
2. भारत में कोई चीज खरीदने–बेचने के लिए 'रूपये' का इस्तेमाल होता है और बांग्लादेश में 'टके' का। 'रूपया' और' टका' क्रमशः भारत और बांग्लादेश की मुद्राएँ हैं। नीचे लिखे देशों की मुद्राएँ कौन–सी हैं?

   सऊदी अरब जापान फ्रांस इटली इंग्लैड

कविता की कहानी

1. इस कविता की कहानी को अपने शब्दों में लिखो।
2. क्या तुमने कोई और ऐसी कहानी या कविता पढ़ी है जिसमें सूझबूझ से बिगड़ा काम बना हो, उससे अपनी कक्षा में सुनाओ।
3. कविता को ध्यान से पढ़कर 'अंधेर नगरी' के बारे में कुछ वाक्य लिखो।

   (सड़कें, बाजार राजा का राजकाज)
4. क्या ऐसे देश को 'अंधेरी नगरी' कहना ठीक है? अपने उत्तर का कारण भी बताओ।

कविता की बात

1. '' प्रजा खुश हुई जब मरा मूर्ख राजा। ''

   (क) अंधेरी नगरी की प्रजा राजा के मरने पर खुश क्यों हुई ?

   (ख) यदि वे राजा से परेशाान थे तो उन्होंने उसे खुद क्यों नहीं हटाया ? आपस में चर्चा करो।
2. ''गुरू का कथन, झूठ होता नहीं है।''

   (1) गुरूजी ने क्या बात कही थी?

   (2) राजा यह बात सुनकर फाँसी पर लटक गया। तुम्हारे विचार से गुरूजी ने जो बात कही, क्या वह सच थी?

   (3) गुरूजी ने यह बात कहकर सही किया या गलत? आपस में चर्चा करो।

अलग तरह से

अगर कविता ऐसे शुरू हो तो आगे किस तरह बढ़ेगी? थी बिजली और उसकी सहेली थी बदली

....

....

....

क्या होता यदि ....

1. मंत्री की गर्दन फँदे के बराबर की होती?
2. राजा गुरूजी की बातों में न आता?
3. अगर संतरी कहता कि '' दीवार इसीलिए गिरी क्योंकि पीली थी'' तो महाराज किस–किस को बुलाते? आगे क्या होता ?

शब्दों की छानबीन

1. नीचे लिखे वाक्य बढ़ो। जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उन्हें आजकल कैसे खिलते है, यह भी बताओ।

   (क) न जाने की अंधरे हो कौन छन में!

   (ख) गुरू ने कहा तेज ग्वालिन न भग री!

   (ग) इसी से गिरी, यह न मोटी घनी थी!

   (घ) ये गलती न मेरी, यह गलती बिरानी!

   (ङ.) न ऐसी महूरत बनी बढ़िया जैसी।

2. चमाचम थी सड़कें .... इस पंक्ति में 'चमाचम' शब्द आया है। नीचे लिखे शब्दों को पढ़ों और दिए गए वाक्यों में ये शब्द भरो–

   पटापट, चकाचक, फटाफट, चटाचट, झकाझक, खटाखट, चटपट

   1. आँधी के कारण पेड़ से .... फल गिर रहे हैं।
   2. हंसा अपना सारा काम .... कर लेती है।
   3. आज रहमान ने .... सफेद कुर्ता पाजामा पहना है।
   4. उस भुक्खड़ ने .... सारे खड्डे खा डाले।
   5. सारे बर्तन धुलकर .... हो गए।

5NVRQP

पाठ–24

बाबा अंबेडकर

– संकलित

दृढ़ संकल्प, कठोर परिश्रम करके कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। महापुरुष बनने के लिए मनुष्य में ये गुण होने चाहिए। एक साधारण दलित परिवार में जन्म लेकर बाबा साहब अंबेडकर ने अपने इन्हीं गुणों के बल पर भारत के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। विपरीत परिस्थितियों से जूझकर उन्होंने अपने संकल्प को अंततः पूरा किया। **इस पाठ में हम सीखेंगे–** परस्पर विरोधी शब्दों का वाक्य में प्रयोग, विधिवाचक, निषेधात्मक, प्रश्नवाचक तथा आदेशात्मक वाक्य, सरल एवं संयुक्त वाक्य, प्रवाहपूर्वक पढ़ना।

संध्या हो रही है। पश्चिम दिशा में लाली फैल रही है। पक्षी चहचहाते हुए अपने घोंसलों की ओर लौट रहे हैं। बड़ौदा के राजमार्ग पर पेड़ के नीचे एक युवक बैठा है। वह फूट–फूटकर रो रहा है। आँसुओं का झरना लगातार झर रहा है। कोई धीरज नहीं देता उसे, कोई राह नहीं दिखाता उसे।

अचानक वह उठ खड़ा हो जाता है। आँसू पोंछकर सोचता है, ''किसने बनाई है छुआछूत की व्यवस्था? किसने बनाया है किसी को नीच, किसी को ऊँच? भगवान ने? हर्गिज नहीं। वह ऐसा नहीं करता। वह सबको समान रूप से जन्म देता है। यह बुराई मनुष्य ने पैदा की है। मैं इसे मिटाकर रहूँगा।''

मन में बार–बार अपना निश्चय दुहराता हुआ वह युवक मुंबई लौट आता है। फिर वह जो कुछ करता है, उसके कारण आज सारा देश उसे बाबा साहब के नाम से स्मरण करता है।

मध्यप्रदेश के महू नगर में रामजी नाम के एक सूबेदार मेजर थे। वे महार जाति के थे। 14 अप्रैल सन् 1891 ई. को उनके घर चौदहवीं संतान ने जन्म लिया। माता भीमाबाई 5 वर्ष तक उस बालक को पालकर स्वर्ग सिधार गईं। फिर चाची मीराबाई ने उसका पालन–पोषण किया। वे बालक को प्यार से 'भीवा' कहकर बुलाया करती थीं। बाद में यही बालक 'भीमराव रामजी अंबेडकर' कहलाया।

शिक्षण–संकेत– बच्चों से हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों के संबंध में चर्चा करें। वर्ण–व्यवस्था का उल्लेख करते हुए इसकी हानियाँ बताएँ। प्रत्येक अनुच्छेद को विराम–चिह्नों का ध्यान रखते हुए पढ़ने के लिए कहें।

जिस वर्ष भीमराव का जन्म हुआ, उसी वर्ष रामजी नौकरी से छुट्टी पाकर रत्नागिरि के दपोली स्थान पर आ गए थे। यहीं भीमराव को पहली बार एक मराठी स्कूल में भर्ती कराया गया। चार वर्ष बाद वे पिता के साथ सतारा आ गए और सरकारी स्कूल में भर्ती हुए। यहाँ उन्हें सब लड़कों से दूर रखा जाता था। अध्यापक उनकी अभ्यास–पुस्तिका और कलम तक नहीं छूते थे। वे संस्कृत पढ़ना चाहते थे, किन्तु संस्कृत के अध्यापक ने उन्हें पढ़ाना स्वीकार नहीं किया। विवश होकर वे फारसी पढ़ने लगे। विद्यालय में उन्हें दिनभर प्यासा रहना पड़ता था, क्योंकि उन्हें पानी के बर्तनों में हाथ लगाने की अनुमति नहीं थी।

सन् 1905 में रामाबाई नाम की कन्या से भीमराव की शादी हो गई। उस समय वह नौ वर्ष की थी। शादी के बाद भीमराव अपने पिता के साथ मुंबई चले गए। वहाँ वे एलफिंस्टन स्कूल में भर्ती हुए। इस स्कूल में छुआछूत की कुप्रथा नहीं थी।

दो वर्ष बाद भीमराव ने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। महार जाति के लिए यह बहुत गौरव की बात थी। घर में खूब खुशियाँ मनाई गईं। भीमराव एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़ने लगे। बड़ौदा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ ने प्रसन्न होकर उन्हें 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति देना आरंभ कर दिया। बी.ए. उत्तीर्ण होने पर महाराज ने उन्हें बड़ौदा में अपने दरबार में नौकरी दे दी। दुर्भाग्य से इसी वर्ष उनके पिता का स्वर्गवास हो गया।

महाराज के दरबार में भीमराव से कट्टर हिन्दू घृणा करते थे। चपरासी तक उनको फाइलें फेंककर देते थे। तंग आकर भीमराव ने नौकरी छोड़ दी। वे फिर महाराज से छात्रवृत्ति पाने में सफल हुए और उच्च शिक्षा के लिए कोलंबिया (अमेरिका) चले गए। अपनी जाति के वे पहले विद्यार्थी थे, जिन्हें विदेश जाने का अवसर मिला।

कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ते समय भीमराव को अनेक नए अनुभव हुए। वहाँ उन्हें सबका प्यार और समानता का व्यवहार मिला। सन् 1916 में वे कोलंबिया से लंदन पहुँचे। वहाँ एक वर्ष रहकर वे मुंबई लौट आए। महाराज गायकवाड़ ने उनको बड़ौदा बुला लिया और सेना में सचिव के पद पर नियुक्त कर दिया, किन्तु वहाँ फिर उनको घृणा का शिकार होना पड़ा। होटलों तक में उन्हें रहने का स्थान न मिला। इस व्यवहार से उनका हृदय टूट गया। उन्होंने नौकरी छोड़ दी और मुंबई जा पहुँचे।

विदेश में रहकर डॉ. अंबेडकर ने दो पुस्तकें लिखी थीं। धीरे–धीरे उनकी विद्वता की धाक जमने लगी। मुंबई के एक कॉलेज में उन्हें प्रोफेसर के पद पर नियुक्त कर लिया गया किन्तु यहाँ भी झंझट थी। धर्म के कट्टर लोग उनसे घृणा करते थे। किसी प्रकार भीमराव ने दो वर्ष निकाले। अन्त में यहाँ भी उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। अब उन्होंने छुआछूत की बुराई से लड़ने के लिए 'मूकनायक' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना आरंभ किया। धन की कमी के कारण कुछ समय बाद ही उसे बंद करना पड़ा। भीमराव पढ़ने के लिए फिर लंदन चले गए। वहाँ तीन वर्ष रहकर उन्होंने अर्थशास्त्र में डाक्टर की उपाधि प्राप्त की। सन् 1923 में वे मुंबई लौट आए और उन्होंने वकालत आरंभ कर दी। एक वर्ष बाद कुछ मित्रों की सहायता से उन्होंने 'बहिष्कृत

हितकारिणी सभा' की स्थापना की। तथाकथित अछूतों की समस्याएँ हल करना इस सभा का मुख्य उद्देश्य था। उन्होंने 'बहिष्कृत भारत' नामक समाचार पत्र भी निकाला। इसी वर्ष वे मुंबई विधानसभा के सदस्य बनाए गए। 27 मई, 1935 को बाबा साहब की पत्नी रामाबाई का देहांत हो गया जिससे वे बहुत दुखी हुए।

डॉ. अंबेडकर समाज में तथाकथित अछूतों को समानता का अधिकार दिलाना चाहते थे। वे उनकी आर्थिक हालत सुधारने के लिए संकल्प ले चुके थे। इतिहास की सच्ची जानकारी देने के लिए उन्होंने 'शूद्र कौन थे' नामक पुस्तक लिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। भारत के वाइसराय ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर उन्हें अपने सचिव मंडल का सदस्य बनाया।

सन् 1947 में भारत के स्वतंत्र होने पर वे संविधान–सभा के सदस्य चुने गए। संविधान का प्रारूप उन्हीं की अध्यक्षता में तैयार हुआ। उन्होंने उसमें तथाकथित अछूतों को समानता का अधिकार दिलाया। राष्ट्र की एकता के लिए भी उन्होंने कई बातें संविधान में सम्मिलित कराईं। संविधान निर्माण में बाबा साहब ने अभूतपूर्व परिश्रम किया।

15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार बनी। डॉ. अंबेडकर को इस सरकार में कानून मंत्री का पद दिया गया। वे भारत के पुराने कानूनों में कई सुधार करना चाहते थे किन्तु प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू से उनका मतभेद हो गया। इसलिए सन् 1951 में उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

सरकार से अलग होकर वे पूरी शक्ति से समाजसेवा में जुट गए। लोग उन्हें देवता की तरह पूजने लगे। वे जहाँ जाते थे, 'जय भीम' के नारों से आकाश गूँज उठता था। वे कट्टर हिन्दुओं के आगे झुकना नहीं जानते थे। उन्होंने सन् 1955 में भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना भी कर डाली और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इस घटना से हिन्दू समाज में बड़ी खलबली मच गई। दुर्भाग्य से 6 दिसम्बर, सन् 1956 को अचानक लाखों पीड़ितों को छोड़कर डॉ. अंबेडकर स्वर्गवासी बन गए।

हिन्दू समाज डॉ. अम्बेडकर को 'बाबा साहब' कहकर सम्मान देता है। वे देश के पिछड़े और दलित समाज के प्राण थे। बचपन से ही उनमें कठिन परिश्रम करने की आदत थी। नित्य 18 घंटे पढ़ना उनके लिए सहज बात थी। सिनेमा और गपशप से वे दूर रहते थे। कठिनाइयाँ उनका मार्ग नहीं रोक पाती थीं। वे जो सोचते, वही करते थे। उनका भाषण बहुत प्रभावशाली होता था। तर्क करने की उनमें अनोखी शक्ति थी। वे किसी भी धर्म के विरोधी नहीं थे। उनकी लड़ाई तो उन बुराइयों से थी, जिन्हें मनुष्यों ने धर्म में उत्पन्न कर दिया है।

डॉ. अंबेडकर इसलिए महान हैं क्योंकि उन्होंने छुआछूत के पाप को नष्ट करने का प्रयत्न किया। उनके प्रयत्नों से सभी को कानून में समानता का अधिकार मिला। आज सभी बालक बालिकाएं साथ–साथ बैठकर पढ़ते हैं, खाते–पीते और खेलते–कूदते हैं। गाड़ियों, होटलों, तीर्थों, मंदिरों आदि सभी जगह वे समान रूप से आते–जाते हैं। हजारों वर्षों के भारतीय इतिहास की यह बहुत बड़ी घटना है। डॉ. अंबेडकर ने देश को छुआछूत के पाप से छुटकारा दिलाया। आनेवाली पीढ़ियाँ बाबा साहब अंबेडकर के महान कार्यों को स्मरण कर गौरव का अनुभव करती रहेंगी।

शब्दार्थ

स्मरण	– याद	प्रभावशाली	– प्रभाववाला
आधारित	– आधार में, सहारे में	समानता	– बराबरी
बहिष्कृत	– बाहर निकाला हुआ	तथाकथित	– जैसा कहा गया है लेकिन जिसके होने में संदेह हो
रत्नागिरि	– महाराष्ट्र के एक जिले का नाम		
रूढ़िवादी	– पुरानी विचारधारा को माननेवाले		

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. बाबा अंबेडकर को किस नाम से जाना जाता है ?

प्रश्न 2. बड़ौदा के महाराज ने डॉ. अंबेडकर को क्या सहायता दी?

प्रश्न 3. डॉ. अंबेडकर को बड़ौदा के महाराज की नौकरी क्यों छोड़नी पड़ी?

प्रश्न 4. नौकरी छोड़ने के बाद उन्होंने क्या संकल्प लिया?

प्रश्न 5. भारतीय संविधान से तथाकथित अछूतों को क्या लाभ हुआ?

प्रश्न 6. डॉ. अंबेडकर महान क्यों माने जाते हैं?

प्रश्न 7. देश को डॉ. अंबेडकर की सबसे बड़ी देन क्या है?

प्रश्न 8. अपने गाँव या शहर में प्रचलित किसी कुरीति पर दो वाक्य लिखो।

प्रश्न 9. अपने गाँव या शहर में प्रचलित कुरीति को दूर करने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

भाषातत्व और व्याकरण

समझो

- 'छोटी–बड़ी समस्याओं को तो हमें प्रायः झेलना पड़ता है।' इस वाक्य में 'छोटी–बड़ी' परस्पर विलोम शब्द हैं।

प्रश्न 1. इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों और उनके परस्पर विरोधी शब्दों को एक साथ एक–एक वाक्य में प्रयोग करो।

पाप, उत्तीर्ण, पक्ष, सफल, दुर्भाग्य।

- **इन वाक्यों को पढ़ो–**

क. कक्षा में बच्चे ध्यानपूर्वक पढ़ रहे हैं।

ख. अभी मध्य अवकाश है, हमारी कक्षा के बच्चे पढ़ नहीं रहे।

ग. क्या तुम्हारी कक्षा के विद्यार्थी शिक्षक से पूछकर कक्षा से बाहर जाते हैं ?

घ. कक्षा में शोर मत करो।

ऊपर लिखे चारों वाक्य चार प्रकार के हैं। पहले वाक्य में कार्य हो रहा है। ऐसे वाक्य 'विधिवाचक वाक्य' कहलाते हैं। दूसरे वाक्य में कार्य नहीं हो रहा है। ऐसे वाक्य 'निषेधात्मक वाक्य' कहलाते हैं। तीसरे वाक्य में प्रश्न पूछा गया है। ऐसे वाक्य 'प्रश्नवाचक वाक्य' कहलाते हैं। चौथे वाक्य में आदेश दिया गया है। ऐसे वाक्य 'आदेशात्मक वाक्य' कहलाते हैं।

प्रश्न 2. नीचे लिखे वाक्यों को उनके सामने कोष्ठक में लिखे वाक्यों में परिवर्तित करो–

क. 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार बनी। (प्रश्नवाचक वाक्य)

ख. कल तुम सब 'बाबा साहब अंबेडकर' पाठ याद करके आए थे।(आदेशात्मक वाक्य)

ग. जाति–व्यवस्था ईश्वर ने बनाई है। (निषेधात्मक वाक्य)

घ. उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र नहीं दिया। (विधिवाचक वाक्य)

- **निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ो–**

क. बालक घर आ गया।

ख. वह खाना खा रहा है।

ये दोनों सरल वाक्य हैं। अब यह वाक्य देखो, 'बालक घर आ गया और वह खाना खा रहा है।' यहाँ 'और' शब्द से दो सरल वाक्यों को जोड़कर एक संयुक्त वाक्य बनाया गया है।

प्रश्न 3 इस पाठ में आए पाँच संयुक्त वाक्य छाँटकर लिखो।

योग्यता–विस्तार

- डॉ. अंबेडकर के जीवन के अन्य प्रेरक प्रसंग खोजो और उन्हें बालसभा में सुनाओ।
- तुम्हें अपने समाज की कौन–सी रीतियाँ बुरी लगती हैं ? उन पर चर्चा करो।

5PEITZ

पाठ–25

चमत्कार

–जाकिर अली 'रजनीश'

प्रस्तुत एकांकी में, समाज के कुछ चालाक किस्म के लोगों द्वारा मामूली–सी बीमारी को जादू–टोने या मंत्रशक्ति से दूर करने की बात बताकर लोगों को भ्रमित करने के कुप्रयासों का पर्दाफाश किया गया है। वैज्ञानिकता की कसौटी पर ऐसे चमत्कारों को कसकर हमें भी समाज में फैले अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

इस पाठ में हम सीखेंगे– अभिनय करना और अनुतान, बलाघात के साथ बोलना, विभक्ति चिह्न का प्रयोग, मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग।

पात्र–परिचय

राहुल – कॉलेज का एक विद्यार्थी, आयु लगभग 18 वर्ष।

रोशन – राहुल का मित्र, विज्ञान का विद्यार्थी।

स्वामी – साधु की वेशभूषा में एक कपटी व्यक्ति, आयु लगभग 45 वर्ष।

जतिन – 6 वर्ष का एक छोटा बालक।

माँ – जतिन की माँ, आयु लगभग 35 वर्ष।

इंस्पेक्टर – पुलिस अधिकारी, आयु लगभग 30 वर्ष ।

सिपाही – पुलिस कर्मचारी, आयु लगभग 35 वर्ष।

(परदा खुलता है। मंच पर स्वामी जी अपना थैला तथा कुछ टीम–टाम लिए बैठे हैं। वे अपना चमत्कार दिखाने की तैयारी में हैं। परदा खुलते ही दर्शकों में खुसुर–फुसुर होने लगती है।)

स्वामी : भाइयो! अब आप लोग शान्त हो जाइए। अभी आप लोगों के सामने मैं अपनी मंत्र–शक्ति का प्रदर्शन करूँगा। लेकिन सबसे पहले एक बार जोर–से तालियाँ बजाइए। (सभी लोग तालियाँ बजाते हैं। तभी रोते हुए जतिन को लेकर उसकी माँ मंच पर आती है।)

शिक्षण–संकेत– बनावटी साधुओं और ठगों के संबंध में कक्षा में चर्चा करें। विद्यार्थियों को बताएँ कि समाचार–पत्रों में ऐसे लोगों के द्वारा ठगी करने की घटनाएँ आम तौर पर प्रकाशित होती रहती हैं। ऐसे समाचारों को संकलित करवाएँ। तीन–चार विद्यार्थियों को अलग–अलग पात्र बनाकर उनसे कक्षा में अभिनय कराते हुए पाठ पढ़ाएँ। विद्यार्थियों के कथोपकथन पर विशेष ध्यान रखें।

माँ : (हाथ जोड़कर स्वामी जी से) स्वामी जी, मेरे बच्चे के पेट में बहुत दर्द है। कृपया इसका उपचार कर दीजिए।

स्वामी : अरे बहिन जी! यह आप क्या कराने आ गईं। मैं तो अपना चमत्कार दिखाने आया था। चलो, इसी बालक पर अपना चमत्कार दिखाऊँगा। बोलो बहिन जी! इसे क्या कष्ट है।

माँ : स्वामी जी, इसके पेट में अक्सर भयंकर दर्द उठता है।

(स्वामी जी जतिन की कमीज उठाकर उसका पेट देखते हैं।)

स्वामी : (गंभीर मुद्रा में) ओह, अनर्थ! इसके पेट में तो पथरी है।

माँ : (घबराकर) यह आप क्या कह रहे हैं, स्वामी जी?

स्वामी : मैं ठीक कह रहा हूँ। लेकिन घबराओ नहीं। मैं अभी अपनी मंत्र–शक्ति से इसकी पथरी निकाल देता हूँ। आओ बेटे, तुम यहाँ पर लेट जाओ।

(स्वामी जी जतिन को एक ऊँची जगह पर लिटा देते हैं और उसकी कमीज पर एक बोतल से पानी जैसा कुछ छिड़कते हैं। इसी समय मौका देखकर राहुल व रोशन चुपके से स्वामी जी के पास में रखा सामान बदल देते हैं। जतिन लगातार रोता रहता है।)

स्वामी : मत रो बेटे! मैं अभी तेरा दर्द दूर कर देता हूँ।

(एक पुड़िया से कोई पाउडर जतिन को खाने को देते हैं। उसे खाने के बाद जतिन चुप हो जाता है। स्वामी जी आहिस्ता–आहिस्ता जतिन के पेट पर हाथ फेरते हैं। अचानक जतिन के पेट से खून बहने लगता है।)

माँ : (बेटे के पेट से खून बहता देखकर) स्वामी जी, यह खून कैसे बहने लगा?

स्वामी : (प्रसन्न होकर) घबराओ नहीं, मेरा प्रयास सफल हो गया। ये रहीं इसके पेट की पथरियाँ! (हाथ फैलाकर दो छोटी कंकरियाँ दिखाते हैं।) इन्हें मैंने अपनी मंत्र–शक्ति से बाहर निकाला है।

माँ : लेकिन इसका खून ?

स्वामी : घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा। (लड़के का पेट पोंछते हैं।) (दर्शकों से) भाइयो! आप में से कोई एक–दो दर्शक आकर देख सकते हैं। इसके पेट पर कोई घाव नहीं है।

(मंच पर दर्शक आते हैं और जतिन का पेट देखते हैं।)

दर्शक : (आश्चर्य भाव से) भाइयो! सच में जतिन के पेट पर कोई घाव नहीं है।

(दर्शक वापस लौट जाते हैं।)

स्वामी : (अपनी बात आगे बढ़ाते हुए) देखा, कोई घाव नहीं। यह सब मेरे मंत्रों का कमाल है। (भीड़ स्वामी जी की जय–जयकार करती है।)

स्वामी : (हाथ ऊपर उठाकर) ठीक है, ठीक है। आप लोग शांत हो जाएँ अब मैं आप लोगों को एक और जादू दिखाऊँगा। (अपने थैले में से एक नारियल निकालकर सबको दिखाते हुए)

स्वामी : यह है मेरी बीस साल की तपस्या का अद्‌भुत नमूना। अभी आप लोगों के सामने इसे तोड़ूँगा तो इसमें से फूल बरसेंगे। (नारियल जमीन पर पटक देते हैं। पर उसमें से कुछ भी नहीं निकलता।)

(राहुल का मंच पर आना)

राहुल : (मुस्कराकर) यह क्या स्वामी जी महाराज!, नारियल तो खाली है ! इसमें से तो कुछ भी नहीं निकला, जबकि यह चमत्कार तो मेरा दोस्त रोशन कर सकता है।

स्वामी : (खिसियाते हुए) क्या बक रहे हो ?

(रोशन का प्रवेश)

रोशन : यह बक नहीं रहा, ठीक कह रहा है। मैं अभी यह चमत्कार करके दिखाता हूँ। (अपने थैले में से नारियल निकालकर उसे जमीन पर पटकता है। उसमें से ढेर सारे मोंगरे के फूल निकलते हैं।

रोशन : देखा यह आश्चर्य आपने! (लोग तालियाँ बजाते हैं।)

राहुल (स्वामी से): देखा आपने मेरे दोस्त का चमत्कार !

स्वामी : (रोष में) यह छोकरा मेरी बराबरी नहीं कर सकता। मैं अपनी मंत्र–शक्ति से आग जला सकता हूँ। मेरी मंत्र–शक्ति देखो। (स्वामी अपने थैले से लाल कागज निकालकर उसके टुकड़े करता है। फिर एक शीशी दिखाते हुए कहता है।) अब मैं कागज़ के इन टुकड़ों पर यह अभिमंत्रित जल डालूँगा और

ये कागज जल उठेंगे। (स्वामी कागज पर शीशी का पदार्थ डालता है, पर आग नहीं जलती।)

राहुल : लगता है, आपका यह मंत्र भी बेकार हो गया, स्वामी जी ! लेकिन लोगों को निराश नहीं होना पड़ेगा, क्योंकि मेरा दोस्त यह चमत्कार भी दिखा सकता है।

रोशन : (कागज फाड़ते हुए) ये रहे कागज के टुकड़े और यह मैंने डाला इन पर अभिमंत्रित जल और यह आग जल उठी।

(आग जलने पर सभी लोग जोर–से तालियाँ बजाते हैं, जब कि स्वामी जी क्रोध में अजीब तरह से मुँह बनाते हैं। तभी मंच पर इंस्पेक्टर व सिपाही आते हैं।)

इंस्पेक्टर : सिपाही, इस ढोंगी को गिरफ्तार कर लो। अब इसकी पोल खुल चुकी है।

(सिपाही आगे बढ़कर स्वामी को पकड़ लेता है।)

स्वामी : (क्रोध में) यह आप क्या कर रहे हैं ? मैं सिद्ध योगी हूँ, सबको भस्म कर दूँगा।

राहुल : अच्छा, तब आप वह मंत्र भी आजमाकर देख लीजिए, शायद काम बन जाए।

इंस्पेक्टर : (स्वामी की नकली दाढ़ी नोंचते हुए) मुझे इसकी बहुत दिनों से तलाश थी। मैं तुम्हारा आभारी हूँ रोशन, जो तुमने इसकी पोल खोलकर इसे पकड़वाया। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि ये चमत्कार होते कैसे हैं?

रोशन : सबसे पहले मैं पथरी का चमत्कार बताता हूँ। दरअसल बात यह है कि इस स्वामी ने सबसे पहले लड़के के पेट पर चूने का पानी मला, फिर हाथ में हल्दी का चूर्ण एवं कंकरी छिपाकर पेट पर हाथ फेरने लगा। चूने के पानी से हल्दी ने रासायनिक क्रिया करके लाल रंग बना दिया, जिसे सब लोगों ने खून समझ लिया और फिर हाथ में छिपी कंकरी को पथरी बता दिया।

इंस्पेक्टर	:	लेकिन यह लड़का चुप कैसे हो गया था ?
रोशन	:	भभूत में मिली मीठी सेकरीन के कारण। जैसे ही इसे मीठा–मीठा लगा, इसने रोना बंद कर दिया।
माँ	:	हाँ बेटा, तुम ठीक कहते हो। जब भी यह कोई मीठी चीज खा जाता है, रोना बंद कर देता है। लेकिन नारियल से फूल कैसे निकल सकते हैं?
रोशन	:	आप लोग तो जानते ही हैं कि नारियल में तीन आँखें होती हैं। उसकी एक आँख में छेद करके पहले से मोगरे की कलियाँ डाल दी गई हैं जो अन्दर खिलकर फूल बन गई हैं।
इंस्पेक्टर	:	और पानी डालने से कागज कैसे जल गए?
रोशन	:	उन कागजों पर पोटैशियम परमैंगनेट का लेप चढ़ा था। जब उन पर पानी के बहाने ग्लिसरीन डाला तो दोनों में क्रिया हुई और आग जल पड़ी। ये सब विज्ञान के चमत्कार हैं। स्वामी महाराज इन्हें मंत्र का चमत्कार कहकर वाहवाही लूटनेवाले थे, पर मैंने सामान बदलकर इनकी पोल खोल दी।
इंस्पेक्टर	:	वाह रोशन! तुमने अपनी बुद्धि से लोगों को भ्रमित होने से बचा लिया! (स्वामी को संबोधित करके) अब चलो, स्वामी महाराज, मैं थाने में तुम्हें अपना चमत्कार दिखाता हूँ।

(सभी लोग जोर–से तालियाँ बजाते हैं और 'चमत्कार भई चमत्कार, विज्ञान के देखो चमत्कार। चिल्लाते हैं।)

(परदा गिरता है।)

शब्दार्थ

मजमा	–	भीड़/व्यक्तियों का समूह
प्रदर्शन	–	दिखावा
अद्‌भुत	–	अनोखा
ढोंगी	–	ढोंग करनेवाला
भस्म	–	राख
आहिस्ता	–	धीरे–से
चमत्कार	–	असामान्य काम करके दिखाना
भयभीत होना	–	डर जाना

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. स्वामी ने जतिन के पेट में दर्द होने का क्या कारण बताया?

प्रश्न 2. स्वामी ने किस ढोंगी प्रक्रिया से जतिन के पेट का दर्द दूर किया?

प्रश्न 3. राहुल ने स्वामी के ढोंग की पोल कैसे खोली?

प्रश्न 4. नारियल से फूल कैसे निकले?

प्रश्न 5. रोशन ने क्या–क्या चमत्कार दिखाए?

प्रश्न 6. भीड़ स्वामी जैसे लोगों के ढोंग से क्यों प्रभावित हो जाती है?

प्रश्न 7. बीमार पड़ने पर हमें किसी साधु के पास जाना चाहिए या डॉक्टर के पास? कारण सहित उत्तर लिखो।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

पोल खोलना	वाहवाही लूटना
हैरान रह जाना	भस्म कर देना
खुसुर–फुसुर करना	

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में से मूल शब्द और उनके आगे या पीछे जुड़े शब्दांश अलग–अलग करके लिखो–

उपयोग, लूटनेवाला, रासायनिक, विज्ञान, प्रदर्शन।

प्रश्न 3. उचित विभक्ति चिह्न लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

क. स्वामी जी जतिन .... एक ऊँची जगह लिटा देते हैं।

ख. स्वामी जी जतिन .... कमीज उठाकर देखते हैं।

ग. स्वामी जी! पेट .... दर्द हो रहा है।

घ. पेंसिल .... लिखो।

ङ. नाटक .... सभी पात्रों ने अच्छा अभिनय किया।

- संबोधन के पश्चात् संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है, जैसे– स्वामी जी! मेरा पुत्र बीमार है।

  यह क्या स्वामी जी महाराज! (आश्चर्य)

  ओह! अनर्थ। (दुख)

- संबोधन के बहुवचन शब्दों में अनुनासिक का प्रयोग नहीं होता, केवल अंतिम अक्षर का 'ओ' से अंत हो जाता है। उदाहरण पढ़ो और समझो।

  लड़को! मैदान में खेलो।

  लड़कों! मैदान में खेलो।

  पहले वाक्य में प्रयुक्त 'लड़को'! शब्द शुद्ध है दूसरे वाक्य में 'लड़कों'! प्रयोग अशुद्ध है।

प्रश्न 4. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों में बहुवचन शब्दों का प्रयोग करो–

क. .... ने तालियाँ बजाईं। (दर्शक)

ख. .... को देखकर आनंद आ गया। (बच्चा)

ग. .... के द्वारा सफाई अभियान चलाया गया। (महिला)

घ. .... की स्वामी से झड़प हुई। (युवक)

ङ. .... ! कल विद्यालय मत आना। (बालक)

रचना

- इस एकांकी की कथा को अपने शब्दों में लिखो ।
- नीचे बने चित्रों को देखो और उसके आधार पर एक कहानी बनाकर लिखो।

गतिविधि

- बाल–सभा में इस नाटक का मंचन करो।

योग्यता–विस्तार

सोचो और चर्चा करो–

- जादू दिखानेवाला या मदारी का खेल दिखानेवाला भीड़ को ताली बजाने के लिए क्यों कहता है?
- इसी तरह का कोई एकांकी बालपत्रिका से लेकर बालसभा में मंचन करो।

345UFD

जाँच के लिए प्रश्न

- **नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ो। इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के सही–उत्तर की क्रम संख्या पर गोला लगाओ –**

प्राचीन समय में पुस्तकें हाथ से तैयार की जाती थी। उस युग में पुस्तकों की प्रतियाँ करने का काम अधिकतर भिक्षु लोग करते थे। ये लोग अपनी छोटी–छोटी कोठरियों में बैठे सावधानीपूर्वक पुस्तकों की प्रतियाँ तैयार करते थे। यह कार्य करते–करते उनकी आँखें दुख जाती थी। अंगुलियाँ दर्द करने लगती थी, फिर भी वे लोग रात–रातभर जागकर यही काम करते रहते थे।

जरा सोचो, एक पृष्ठ यहाँ तक कि एक लाइन लिखने में कितना समय लगता है। फिर पूरी पुस्तक की प्रतिलिपि तैयार करने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता होगा, उसके लिए कितने धैर्य की आवश्यकता होती होगी।

कई वर्षों बाद बेल्जियम के एक चतुर व्यक्ति ने छापेखाने का आवि कार किया। इसके द्वारा बहुत कम समय में किसी भी पुस्तक की दसियों प्रतियाँ तैयार होने लगी। पिछले 500 वर्षों में पुस्तकें छापने की विधि में बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन और सुधार हो गए हैं और आज हजारों और लाखों पुस्तकें बहुत आसानी से छापी जा सकती हैं।

1. प्राचीन समय में संसार में बहुत कम पुस्तकें क्यों थी?
   (क) भिक्षु पुस्तकें लिखते हुए बहुत थक चुके थे।

   (ख) पुस्तकें केवल बेल्जियम में बनाई जाती थी।

   (ग) पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थी।

   (घ) लोगों में धैर्य की कमी थी

2. ''फिर भी वे लोग रात–रातभर जागकर यही काम करते रहते थे।'' इस वाक्य में भिक्षुओं की कौन–सी विशे ता प्रकट होती है?
   (क) उन्हें रातभर कार्य करना पड़ता था।

   (ख) उन्हें अँधेरे में कार्य करना पड़ता था।

   (ग) वे बहुत कम पुस्तकें तैयार कर पाते थे।

   (घ) उनकी आँखें तथा हाथ थक जाते थे।

3. भिक्षु कई घण्टों तक लिखते रहते थे। इसका उन पर क्या प्रभाव पड़ता था?

(क) उन्हें रात भर कार्य करना पड़ता था।

(ख) उन्हें अँधेरे में कार्य करना पड़ता था।

(ग) वे बहुत कम पुस्तकें तैयार कर पाते थे।

(घ) उनकी आँखें तथा हाथ थक जाते थे।

4. ''इसके द्वारा बहुत कम समय में .... '' यहाँ 'इसके' किसकी ओर संकेत करता है?

(क) चतुर व्यक्ति

(ख) छायाखाना

(ग) बेल्जियम

(घ) भिक्षु

5. इस अनुच्छेद के लिए कौन–सा शीर्षक उपयुक्त है?

(क) पुस्तकें हमारी मित्र

(ख) पुस्तकों का महत्व

(ग) छापेखाने का आवि कार

(घ) भिक्षुओं का कष्ट

- **निम्नलिखित प्रश्नों में खाली स्थानों को भरने के लिए सही शब्द छाँटो और उसकी क्रम संख्या पर घेरा लगाओ –**

1. पर्वत की चोटियों .... पर चढ़ना कोई सरल काम नहीं।

(क) में

(ख) पर

(ग) से

2. बिल्ली पेड़ .... बहुत आराम से सो रही थी।

(क) में

(ख) के चारों तरफ

(ग) के नीचे

3. मामा जी सोहन .... पेन लाए।

(क) के लिए

(ख) के द्वारा

(ग) से

4. आज विद्यालय .... अवकाश है।

(क) पर

(ख) में

(ग) के

5. मैंने भगवान .... दर्शन किए।

(क) का

(ख) की

(ग) के

6. इस प्रश्न का उत्तर तो बहुत .... है।

(क) सरल

(ख) सुगम

(ग) सुलभ

7. हवा को चाहे वायु कह लो, चाहे .... , एक ही बात है।

(क) पवन

(ख) पावक

(ग) पावन

8. पहला सवाल तो बहुत सरल था, मगर दूसरा सवाल बहुत ही .... था।

(क) सही

(ख) आसान

(ग) कठिन

9. जहाँ तक .... जाती थी, बर्फ ही बर्फ थी।

(क) नजर

(ख) दिखाई

(ग) सुनाई

10. शहरी और .... बच्चों की सुविधाओं में भेदभाव नहीं होना चाहिए।

(क) नगरीय

(ख) ग्रामीण

(ग) देशी

11. अगर समय पर बारिश हुई होती .... फसल अच्छी होती।

(क) लेकिन

(ख) तो

(ग) एवं

12. तुम्हें व्यायाम करना चाहिए .... स्वस्थ रह सको।

(क) ताकि

(ख) इसलिए

(ग) और

13. गुड़िया पाकर चाँदनी इतनी खुश हुई .... उसे काई खजाना मिल गया हो।

(क) कैसे

(ख) वैसे

(ग) जैसे

14. हर्ष झगड़ा करता है .... वह झगड़ालू कहलाता है।

(क) और

(ख) परंतु

(ग) इसलिए

15. तुम कहाँ जा रही हो इस वाक्य के आखिरी में .... चिह्न आएगा।

(क) ?

(ख) !

(ग) ।

- **नीचे लिखे अंश को ध्यान से पढ़ो। उसके बाद दिए गए प्रश्नों के उत्तर की क्रम संख्या पर गोला लगाओ –**

क्रिकेट क्लब

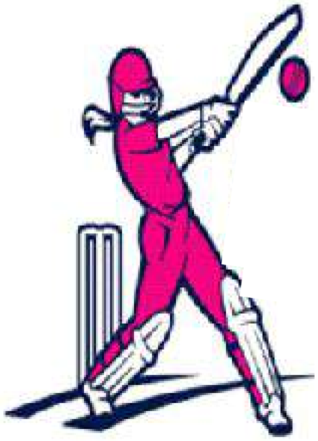

सब कक्षाओं के साथियों का स्वागत है

आइए, क्रिकेट खेलना सीखें!

प्रति रविवार को खेल के मैदान में

समय

लड़कियों के लिए प्रातः 9.00–10.00 बजे तक
लड़कों के लिए प्रातः 10.30–12.00 बजे तक

सदानन्द प्राइमरी विद्यालय
महात्मा गाँधी मार्ग
रामपुर, उत्तर प्रदेश

1. ऊपर दिया गया अंश है?
   (क) सूचना
   (ख) कहानी
   (ग) आदेश
   (घ) निबंध
2. क्रिकेट क्लब किनके लिए है?
   (क) केवल लड़कों के लिए
   (ख) केवल लड़कियों के लिए

(ग) सभी साथियों के लिए

(घ) इसमें से किसी के लिए नहीं

3. निम्नलिखित में से कौन–सा सही है?

(क) लड़कियों का अभ्यास लड़कों से पहले होगा।

(ख) लड़कियों का अभ्यास लड़कों से ज्यादा लम्बा होगा।

(ग) लड़के–लड़कियों के अभ्यास अलग–अलग दिनों में होंगे।

(घ) लड़कों का अभ्यास रविवार दोपहर को होगा।

4. लड़कों को कितनी देर क्रिकेट खेलना सिखाया जाएगा?

(क) तीस मिनट

(ख) डेढ़ घंटे

(ग) दो घंटे

(घ) तीन घंटे

5. यह क्रिकेट क्लब किस नगर में है?

(क) सदानंद

(ख) महात्मा गांधी

(ग) रायपुर

(घ) उत्तर प्रदेश

- यदि तुम्हें अपने स्कूल में चीजों को मनपसंद तरीके से बदलते की छूट मिले तो तुम उसमें कौन–कौन से बदलाव करना पसंद करोगे?
- अगर तुम्हें पक्षियों को रंगने का अधिकार मिल जाए तो तुम किन–किन पक्षियों को क्या–क्या रंग दोगे?

पुष्पाणि

34EQH1

संस्कृत		हिंदी	चित्र
कुमुदम्	–	कुमुदिनी	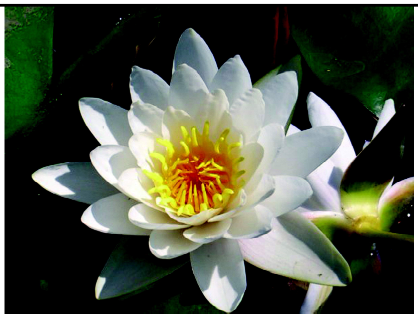
सूर्यकान्तिः	–	सूर्यमुखी	
चम्पकः	–	चम्पा	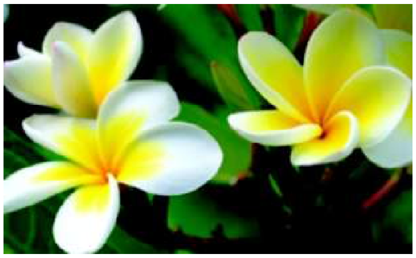
पाटलम् (स्थलम्)	–	गुलाब	
कमलम्	–	कमल	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
मन्दारम्	–	आक	
सेवन्तिका	–	सेवन्ती	
जपापुष्पम्	–	गुड़हल	
मल्लिका	–	मोंगरा	
वैजयन्ती	–	वैजन्ती	

वाहनानि

3FSYXK

संस्कृत		हिंदी	चित्र
लोकयानम् (लोकवाहनम्)	–	बस	
विमानम्	–	विमान	
कारयानम्	–	कार	
नौका	–	नाव	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
रेलयानम्	–	रेल	
सायकलयानम्	–	सायकल	
स्कूटरयानम्	–	आटो	

वर्णाः

संस्कृत		हिंदी
श्वेतः (शुभ्रः, धवलः)	–	सफेद
रक्तः	–	लाल
नीलः	–	नीला
कृष्णः	–	काला
पीतः	–	पीला
हरितः	–	हरा
पाटलः	–	गुलाबी
केसरः	–	केसरिया
कपिशः	–	कत्था

चित्र

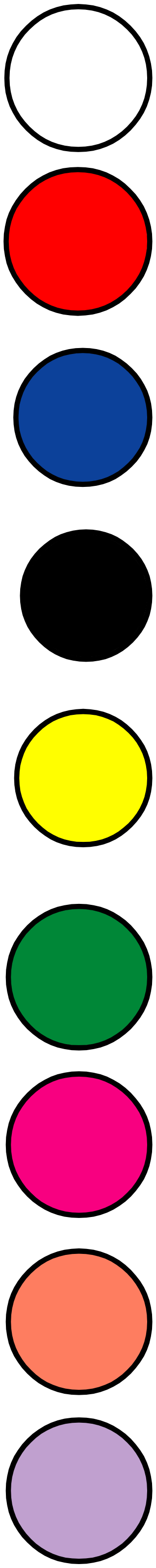

वृत्तिनां नामानि

3GBR1V

संस्कृत		हिंदी	
शिक्षकः (अध्यापकः)	–	शिक्षक	
वैद्यः	–	चिकित्सक	
कुम्भकारः	–	कुम्हार	
स्वर्णकारः	–	सुनार	
वणिक्	–	व्यापारी	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
आपणिकः	–	दुकानदार	
लेखकः	–	लेखक	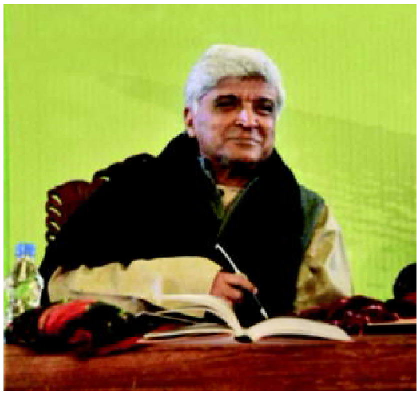
गायकः	–	गायक	
नर्तकी	–	नर्तकी	
वंशीवादकः	–	बांसुरीवादक	

पारिवारिक सम्बन्धः

3GKH3I

संस्कृत		हिंदी
जननी (माता)	–	माता
जनकः (पिता)	–	पिता
भ्राता	–	भाई
भगिनी	–	बहन
पितामहः	–	दादा
पितामही	–	दादी
मातुलः	–	मामा

संस्कृत		हिंदी
मातामह	–	नाना
मातामही	–	नानी
श्वशुरः	–	ससुर
श्वश्रूः	–	सास
श्यालः	–	साला
पुत्रः (सुतः, तनयः)	–	पुत्र
पुत्री (सुता, तनया)	–	पुत्री

दिनचर्या

संस्कृत — **चित्र**

अहं जागर्मि। —

अहं दन्तधावनं करोमि। —

अहं स्नानं करोमि। —

अहं केशं संवाहयामि —

अहं भोजनं करोमि। —

संस्कृत	चित्र
अहं विद्यालयं गच्छामि ।	
अहं विद्यालये अध्ययनं करोमि ।	
अहं विद्यालयात् आगच्छामि ।	
अहं क्रीडनकेन खेलामि ।	
अहं पुस्तकं पठामि ।	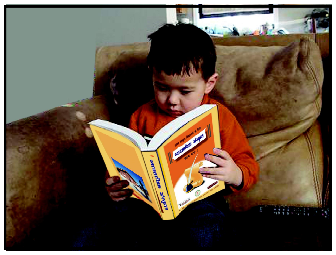
अहं शयनं करोमि ।	